शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 10 अंक : 5 1 दिसम्बर , 2017

(मार्गशीर्ष-पौष, विक्रम संवत् 2074)

संस्थापक
स्व. मुकुन्द राव कुलकर्णी

संरक्षक
के.नरहरि

परामर्श
डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल
जगदीश प्रसाद सिंघल

सम्पादक
सन्तोष पाण्डेय

सह सम्पादक
विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी ❑ भरत शर्मा

संपादक मंडल
प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय
डॉ. नाथू लाल सुमन
डॉ. एस.पी. सिंह
डॉ. ओमप्रकाश पारीक

प्रबन्ध सम्पादक
महेन्द्र कपूर

व्यवस्थापक
बजरंग प्रसाद मजेजी

प्रेषण प्रभारी
बसन्त जिन्दल ❑ नौरंग सहाय भारतीय

कार्यालय प्रभारी
आलोक चतुर्वेदी : 9782873467

प्रकाशकीय कार्यालय
82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग,
जयपुर (राज.) 302001
दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :
शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,
कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053
दूरभाष : 011-22914799

E-mail :
shaikshikmanthan@gmail.com
Visit us at :
www.shaikshikmanthan.com

एक प्रति 20/- वार्षिक शुल्क 200/-
आजीवन (दस वर्ष) 1500/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लौट चलें खेलों की ओर ❑ डॉ. ऋतु सारस्वत

शहरीकरण के चलते, हमारे आसपास खेल के मैदान गायब हो चुके हैं। बच्चे गलियों में खेलने को मजबूर हैं, जो कि वाहनों की आवाजाही के कारण सुरक्षित नहीं है। महानगरों में तो यह गलियाँ भी नहीं हैं। जो खेल के मैदान हैं, वो कचरे के ढ़ेर और गंदगी से अटे पड़े हैं। स्कूल में भी खेल और शारीरिक गतिविधियों का अभाव है। यह जानते हुए भी शारीरिक गतिविधियों के अभाव के कारण भारत विश्व का तीसरा देश है जहाँ 11 प्रतिशत बच्चे मोटापे का शिकार हो रहे हैं। स्कूल इस दिशा में सचेत नहीं है, क्योंकि यह उनके लिए शैक्षणिक उत्तरदायित्व का हिस्सा नहीं है।

6

अनुक्रम

4.	शिक्षा का अविभाज्य अंग बने खेल	- सन्तोष पाण्डेय
8.	शिक्षा के साथ खेलों को वरीयता	- डॉ. रेखा भट्ट
11.	बाल विकास के लिए आवश्यक खेल	- बिरदी चन्द वैष्णव
13.	खेल के सकारात्मक पहलू	- डॉ. बुद्धमति यादव
15.	खेल और महिला	- डॉ. रेखा यादव
17.	वैश्विक स्तर पर खेल और हम	- प्रो. मधुर मोहन रंगा
19.	Role of Physical Education in schools	- Dr. Sanjeev Kumar
26.	संतुलित हो शिक्षा नीति	- विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी
28.	महिला शिक्षा विकास की कुंजी	- डॉ. अनीता मोदी
31.	शिक्षा को बेहतर बनाएगी मातृभाषा	- एम. वेंकैया नायडू
33.	नूतन भारत : कौशल विकास	- डॉ. हरनाम सिंह
38.	वेदों में राष्ट्रीयता एवं वैश्विक दृष्टि	- डॉ. धर्मवीर वशिष्ठ
40.	Myth of Being a Good Teacher	- Prof. D. P. Tiwari
41.	गतिविधि	

Education and Sports

❑ Dr. TS Girishkumar

So, it shall be through games that one comes into experiencing sacrifices on a mundane level to experience co-existence, at the very early age itself. Such training, in the very school level can be directed to man making as well as mind making through Bharatiya Sanskriti. When the young students grow up and come across the reality with Bharatiya Sanskriti, it becomes normal and spontaneous for him to understand and go on.

24

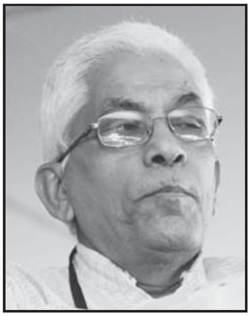

देश में खेलों के प्रति सोच में थोड़े से सकारात्मक परिवर्तन का परिणाम है कि देश के अनेक युवा व युवादल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का गौरव बढ़ाने में जुटे हैं। शनैः शनैः इसमें वृद्धि से देश के हर एक खेल प्रेमी को राष्ट्र का गौरव प्राप्त होगा। यह स्मरण रखना होगा की खेलों में प्रतिस्पर्द्धा व सफलता से व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र का गौरव बढ़ता है। यह आनन्ददायक है, परन्तु खेलों में सफलता से बड़ी चीज है- खेल भावना। इसे जीवन मूल्यों में सर्वोपरि माना जाता है। खेल राष्ट्रीय सामान्य जनस्वास्थ्य के संकेतक हैं, न की स्वयं में अभीष्ट। इन्हीं भावनाओं के साथ खेलों को सामान्य जीवन दिनचर्या व शिक्षा का अविभाज्य अंग बनाने के प्रयास हैं।

शिक्षा का अविभाज्य अंग बने खेल

❑ **सन्तोष पाण्डेय**

संपादकीय

स्वामी विवेकानन्द जी से मिलने आये एक युवक ने उनका शिष्य बनने की इच्छा व्यक्त की। स्वामी जी ने युवक की कृषकाय काया पर दृष्टिपात करते हुए कहा कि ठीक है। परन्तु यह तो बताओ कि शिष्य बनने की तुम्हारी योग्यता क्या है? इसी पर युवक ने अपनी श्रेष्ठ उत्कृष्ट शैक्षिक उपलब्धियों का वर्णन किया। स्वामी जी ने उसकी काया पर दृष्टि केन्द्रित करते हुए मौन को तोड़ा और प्रश्न किया कि क्या तुम फुटबाल, वॉली-बॉल, कबड्डी खेल सकते हो अथवा एक मील की दौड़ लगा सकते हो? युवक ने अचंभित हुये उत्तर 'ना' में दिया। स्वामी जी ने युवक को कहा कि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन व बुद्धि का वास होता है। स्वस्थ तन में ही मनुष्य अपनी सभी रचनात्मक क्षमताओं को वास्तविक बनाकर जीवन को समाज के लिये उपयोगी बना सकता है। शिक्षा के माध्यम से स्वस्थ तन, मन व बुद्धि विवेक को एक निश्चित ध्येय युक्त बनाया जा सकता है। स्वस्थ तन की प्रथम निशानी नीरोगी काया है। शरीर को निरन्तर क्रियाशील बनाये रखने तथा शरीर को पर्यावरण व भोजन शैली से उत्पन्न विषैले अवयवों से मुक्त करने के लिये अनुशासित शारीरिक गतिविधियों का इसमें विशिष्ट स्थान है। खेल-कूद, ध्यान व योग, अनुशासित शारीरिक गतिविधियाँ शरीर को नीरोगी, सक्रिय व पुष्ट करने में सहायक होती है। मनुष्य के जीवन को अनुशासित करने में शिक्षा का बहुमूल्य योग है। परन्तु विड़म्बना यह है कि आज जन सामान्य यह विश्वास करता है कि खेल कूद तो विलासिता है, जिसे अतिसम्पन्न वर्ग ही अपना सकता है। गरीबी, आय के निम्नस्तर से ग्रस्त बहुसंख्यक जनसंख्या मानने लगी है कि केवल शिक्षा ही एक मात्र माध्यम है जिससे व्यक्ति परिवार व समाज आर्थिक संबल प्राप्त कर सकता है। ऐसी सोच खेलों के प्रति अत्यधिक कम जानकारी व मिथ्या धारणाओं को पुष्ट करती है। वास्तव में खेल ऐसी गतिविधि है जो शरीर में रचनात्मक ऊर्जा के उत्सृजित करती है। एक खेल दल (टीम) के सदस्य आपस में सहयोग, समन्वय, व्यक्तिगत त्याग व टीम की सफलता के प्रति संपूर्ण निष्ठा व सम्पूर्ण श्रेष्ठ जीवन मूल्यों का सृजन करते हैं। शिक्षा में निरन्तर

मानसिक अभ्यास से मानसिक जड़ता व तनाव का सृजन होता है, इस मानसिक जड़ता को तोड़ने व तनावों से मुक्ति में खेल बड़ी भूमिका निभाते हैं। इन्हीं को दृष्टिगत कर भारत के लगभग सभी शिक्षा आयोगों ने शिक्षा में खेल की भूमिका महत्त्वपूर्ण मान इसे पाठ्यक्रम शिक्षण के साथ अनिवार्य बनाने का मंतव्य व्यक्त किया। समय-समय पर स्वीकार की गई राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में भी इन्हें अति महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया। परन्तु व्यवहार में लागू करते समय इनको भुला दिया गया। प्रारम्भिक शिक्षा में इसे मात्र आनन्द व मनोरंजक गतिविधि मान कर संचालित किया जाता है जबकि इस स्तर पर खेलों के माध्यम से शिक्षण प्रभावकारी बन सकता है। माध्यमिक शिक्षा में इन्हें खानापूर्ति के रूप में अपनाया जाता है। केवल कतिपय बड़े-बड़े पब्लिक स्कूलों में इन्हें परीक्षा परिणामों में श्रेष्ठता के सहायक के रूप में स्थान मिलता है। उच्च शिक्षा जो वास्तव में युवाशक्ति के केन्द्र हैं, में ये केवल नाममात्र की गतिविधि के केन्द्र होते हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल में कॉलेजों व विश्वविद्यालयों में शैक्षिक गुणवत्ता व खेल प्रवृत्तियों व गतिविधियों का अनवरत रूप से क्षरण का क्रम जारी है।

आज देश का परिदृश्य पूरी तरह बदला हुआ है। समाज को निम्न मध्यम से उच्च मध्यम वर्ग व सम्पन्न वर्ग में बदलने की चाहत में जीवन की प्राथमिकतायें व आदर्श बदल गये हैं। भौतिक संसाधनों की प्राप्ति व उनको उपयोग ही जीवन का परम लक्ष्य बन गया है। शिक्षा व खेलों का संबंध विच्छेद इसका परिणाम है। शिक्षा गला घोंटू तथा दम घोंटू सीमा तक प्रतियोगी बन चुकी है। अब बालक-बालिकायें प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिये एक वर्ष पूर्व नहीं वरना अनेक वर्ष पूर्व कक्षा 5 व 6 से ही प्रारंभ करने लगे हैं। भिन्न-भिन्न विशेषता वाले कोचिंग संस्थानों की एक समानान्तर शिक्षा व्यवस्था बन चुकी है। छात्रों का अधिकांश समय इन प्रतियोगी कोचिंग व प्रशिक्षण प्राप्त करने में लगा रहता है। ऐसे में खेल तो क्या औपचारिक शिक्षा व्यवस्था भी मानव निर्माण के लक्ष्य से भटक रही है। अभिभावक भी इसी में सफलता को अभीष्ट मान बच्चों पर भारी मानसिक दबाव बनाते हैं। परिणाम भी सामने है गत एक दो वर्ष में कोटा शहर जो कोचिंग हब माना जाता है, में छात्रों ने बड़ी संख्या में आत्महत्या की। समाज में सम्पन्नता के साथ शारीरिक निष्क्रियता बढ़ रही है, मोटापा, अवसाद, मधुमेह, हृदय रोग जैसी व्याधियों का स्तर बढ़ रहा है। अब बच्चे व युवा भी इनकी चपेट में आने लगे हैं। भौतिकता से पीड़ित साधन सम्पन्न वर्ग का ही नहीं, वरन विशाल निर्धन वर्ग जो गरीबी व कुपोषण के साथ-साथ अशिक्षा व शारीरिक निष्क्रयता से पीड़ित है। यह अब राष्ट्रीय व्याधि का रूप ले रही है। इसका एक मात्र उपचार अनुशासित शारीरिक गतिविधियों को प्रेरित करना है। व्यक्ति, परिवार, समाज में व्याप्त खेलों के प्रति एक प्रकार का नकारात्मक व उदासीनतापूर्ण दृष्टिकोण बना हुआ है, उसमें परिवर्तन लाने के प्रयास आवश्यक हैं।

देश में कतिपय पश्चिमी संस्कृति में उत्पन्न कुछ विशिष्ट खेलों में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मिली सफलताओं से राष्ट्रीय गौरव तो बढ़ा ही है, साथ ही उस सफलता से खिलाड़ियों के लिये आर्थिक सफलता के द्वार भी खुले हैं। इससे खेलों के प्रति समाज का ध्यान गया है। फलत: नये-नये खेलों में व्यक्तिगत व टीम सफलताओं से नई आशा का संचार हुआ। खेल भी अब उत्तरोत्तर तकनीक प्रधान व गहन प्रशिक्षण वाले बन गये हैं। इनके बिना खिलाड़ियों का वैश्विक स्तर पर प्रदर्शन कमजोर बना रहता है। विभिन्न खेलों के लिये बड़े संगठन, परिषद व अधिकरण भी स्वैच्छिक होने के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा व राजनीति का केन्द्र बन गये हैं। खेलों को जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बनाने के लिये सरकार व समाज को आगे आना होगा। वर्तमान सरकार खेलों को इन बुराइयों से मुक्त कराने के लिये सतत् प्रयत्नशील है, वह खेलों को व्यापक स्तर पर प्रोत्साहित करने का कार्य राष्ट्रीय खेल नीति के अन्तर्गत कर रही है। परन्तु यही पर्याप्त नहीं है। वास्तव में खेलों को जीवन की दिनचर्या का अविभाज्य अंग बनाने के लिये व्यक्ति परिवार, समाज, शैक्षिक प्रशासन, कार्पोरेट जगत के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन हेतु व्यापक प्रयास करने होंगे। आज के खेल भी बहुत मँहगे हो चुके हैं। इनका विकल्प स्थानीय खेलों को प्रोत्साहन देना लक्ष्य भेद में सहायक हो सकता है। कबड्डी, खो-खो, गुल्ली डंडा, देशी कुश्ती, पहलवानी के लिये अखाड़े व दंगल आयोजन मलखंभ आदि को प्रोत्साहन बड़ी उपलब्धि दिला सकता है तथा खेलों के जन सहभागिता, जन समर्थन व जन सहयोग दिलाया जा सकता है। हाल ही में प्रस्फुटित नई रचनात्मक प्रवृत्ति खेलों में महिलाओं की बढ़ती सहभागिता है, जिसने अनेक सामाजिक वर्जनाओं को तोड़ा है, स्वागत योग्य है, आगे और अधिक प्रोत्साहन अपेक्षित है।

देश में खेलों के प्रति सोच में थोड़े से सकारात्मक परिवर्तन का परिणाम है कि देश के अनेक युवा व युवादल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का गौरव बढ़ाने में जुटे हैं। शनै: शनै: इसमें वृद्धि से देश के हर एक खेल प्रेमी को राष्ट्र का गौरव प्राप्त होगा। यह स्मरण रखना होगा की खेलों में प्रतिस्पर्द्धा व सफलता से व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र का गौरव बढ़ता है। यह आनन्ददायक है, परन्तु खेलों में सफलता से बड़ी चीज है- खेल भावना। इसे जीवन मूल्यों में सर्वोपरि माना जाता है। खेल राष्ट्रीय सामान्य जनस्वास्थ्य के संकेतक हैं, न की स्वयं में अभीष्ट। इन्हीं भावनाओं के साथ खेलों को सामान्य जीवन दिनचर्या व शिक्षा का अविभाज्य अंग बनाने के प्रयास हैं। ❑

शहरीकरण के चलते, हमारे आसपास खेल के मैदान गायब हो चुके हैं। बच्चे गलियों में खेलने को मजबूर हैं, जो कि वाहनों की आवाजाही के कारण सुरक्षित नहीं है। महानगरों में तो यह गलियाँ भी नहीं हैं। जो खेल के मैदान हैं, वो कचरे के ढ़ेर और गंदगी से अटे पड़े हैं। स्कूल में भी खेल और शारीरिक गतिविधियों का अभाव है। यह जानते हुए भी शारीरिक गतिविधियों के अभाव के कारण भारत विश्व का तीसरा देश है जहाँ 11 प्रतिशत बच्चे मोटापे का शिकार हो रहे हैं। स्कूल इस दिशा में सचेत नहीं है, क्योंकि यह उनके लिए शैक्षणिक उत्तरदायित्व का हिस्सा नहीं है।

लौट चलें खेलों की ओर

❑ डॉ. ऋतु सारस्वत

हाल ही में एम्स, दिल्ली के एक शोध में जो तथ्य सामने आए हैं वह चिंतित कर देने वाले हैं। टी.वी., लैपटॉप, कम्प्यूटर एवं मोबाइल फोन के चलते भारतीय बच्चे मायोपिया (दूर की नजर कमजोर होना) की गिरफ्त में आ रहे हैं। दस साल पहले जो आँकड़ा महज सात प्रतिशत था वह बढ़कर साढ़े तेरह प्रतिशत तक पहुँच गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि ऐसा ही रहा तो आने वाले दस सालों तक करीब 25 से 30 प्रतिशत बच्चे इसकी चपेट में होंगे। यही नहीं कोलंबिया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने पाया कि कम्प्यूटर पर बच्चों की बढ़ती निर्भरता से उनका दिमाग संकुचित हो रहा है। प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्यों बच्चे इलेक्ट्रोनिक गैजेट्स के आदी हो रहे हैं? दरअसल, इन गैजेट्स के आदी होने के कई कारण हैं, पहला तो यह कि लैपटॉप या कंप्यूटर को ज्ञान का भंडार मान लिया गया है, इंटरनेट सर्फिंग के जरिए, बच्चे त्वरित सूचनाएँ एकत्र करने में स्वयं की सफलता मानते हैं तो उनके अभिभावक यह सोच कर संतुष्ट होते हैं कि विभिन्न जानकारियों को ढूँढ़ने के लिए किताबों को खंगालना नहीं पड़ेगा। पर इस सहज उपलब्धता ने बच्चों की रचनात्मकता को खत्म कर दिया है, जिससे उनकी कार्यक्षमता तो प्रभावित होती है साथ ही लगातार कम्प्यूटर पर बैठने से शरीर बीमारियों का गढ़ भी बन जाता है। कैलिफोर्निया, सिलिकन वैली में कई स्कूलों में कम्प्यूटर जैसी चीजों पर प्रतिबंध है, यहाँ के वालफोर्ड स्कूल में एक कम्प्यूटर तक नहीं है। स्कूल में पढ़ने के लिए ब्लैक बोर्ड, रंगीन चॉक, पेन और कागज का उपयोग होता है। स्कूल प्रशासन का मानना है कि शारीरिक गतिविधियों के जरिए बच्चे बेहतर तरीके से सीखते हैं। एक महत्त्वपूर्ण कारण जो सर्वविदित है, ये इलैक्ट्रोनिक गैजेट्स, गेम्स खेलने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। बच्चे लगातार कई घंटे इस पर गेम्स खेलने में अपना समय व्यतीत करते हैं पर क्या इसके लिए सिर्फ बच्चे दोषी हैं? शहरीकरण के चलते, हमारे आसपास खेल के मैदान गायब हो चुके हैं। बच्चे

एक्सरसाइज सिर्फ 15 मिनट की है। वर्ल्ड हैल्थ ऑर्गनाइजेशन के अनुसार बचपन में मोटापे की समस्या 21वीं सदी में वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। भारत में बच्चों में खेलों के प्रति रुचि पैदा करने के लिए कोई खास नीति नहीं है, लेकिन ब्रिटेन ने 1991 में ही बच्चों के अधिकारों के बारे में संयुक्त राष्ट्र समझौते को अपना लिया था, जिसमें 'प्ले डे कैंपेन' भी शामिल था, जिसके तहत् बच्चों के लिए खेलों को अनिवार्य किया गया और यह सुनिश्चित किया गया कि ब्रिटेन में सभी बच्चे खेलों में हिस्सा लें। इस बारे में संयुक्त राष्ट्र का जो घोषणा पत्र है वह केवल पारम्परिक खेलों को ही शामिल नहीं करता बल्कि इसमें 'प्ले' से मतलब बच्चों के ऐसे समय से है जिसमें वे आराम करें, खेलें, अपनी रुचि की सृजनात्मक और कलात्मक गतिविधियों में समय बिताएँ। यह जरूरी है कि हमारी संपूर्ण कार्यप्रणाली इस विषय को गंभीरता से ले। ❑

गलियों में खेलने को मजबूर हैं, जो कि वाहनों की आवाजाही के कारण सुरक्षित नहीं है। महानगरों में तो यह गलियाँ भी नहीं हैं। जो खेल के मैदान हैं, वो कचरे के ढ़ेर और गंदगी से अटे पड़े हैं। स्कूल में भी खेल और शारीरिक गतिविधियों का अभाव है। यह जानते हुए भी शारीरिक गतिविधियों के अभाव के कारण भारत विश्व का तीसरा देश है जहाँ 11 प्रतिशत बच्चे मोटापे का शिकार हो रहे हैं। स्कूल इस दिशा में सचेत नहीं हैं, क्योंकि यह उनके लिए शैक्षणिक उत्तरदायित्व का हिस्सा नहीं है। ब्रिटेन के सेंट निनियांस प्राइमरी स्कूल ने, बच्चों के स्वास्थ्य का खयाल रखते हुए उन्हें रोजाना एक मील यानी लगभग 1.6 कि.मी. की दौड़ लगाने की छूट दे रखी है। बच्चों में बढ़ रही मोटापे की समस्या को देखते हुए अब देश के अन्य 500 प्राइमरी स्कूलों ने भी अपने यहाँ डेली माइल की शुरूआत कर दी है। इस पूरी कवायद के लिए स्कूल ने न तो कोई टाइम टेबल बदला है ना ही कोई फंड जारी किया है। यह पूरी

(व्याख्याता, राजकीय महाविद्यालय, पुष्कर)

MSVSS Organized Diwali Sneh Milan

Maharaja Sayajirao Vishvavidyalaya Shaikshik Sangh (MSVSS) had organized Diwali Sneh Milan, on 17th Nov 2017. The program was organized as gesture of courtesy and warm wishes for New Year to all the teachers of University parivar and Senate / Syndicate members of the M. S. University of Baroda. Program was addressed by Shr. Sunilbhai Mehta, on the topic "Shikshak Aur Rashtra", his address was very much in line with current situation of the teaching fraternity. Sunilbhai, motivated all the teachers with right examples and guidance for putting efforts for betterment of society, and nation as a whole.

The welcome address was given by Prof. Ranjan Sengupta, President MSVSS, and also offered Shawl and Shrifal to welcome Shri Sunilbhai Mehta. Our general secretary Prof. Gaurang Bhavsar, briefed the gathering with the activities of MSVSS. At this function MSVSS took the opportunity of felicitating, Prof. Pragnesh Shah, as Vice President, of ABRSM, Delhi.

Prof. Pragnesh Shah, addressed the gathering with his motivating and energetic words. He also briefed the gathering about activities of ABRSM and committee on 7th pay. He also emphasized the role of teacher as a nation builder.

- The program was attended by more than 200 teachers from all the faculty and departments of the University.
- Deans of the faculties and heads of departments graced the function with their presence.
- Senate and syndicate members from various faculties were also present and interacted in the function.
- The function was anchored by Dr. Dipendra Jadeja, Treasurer, MSVSS.
- The program was followed by question session and dinner.

शिक्षा के साथ खेलों को वरीयता

❑ डॉ. रेखा भट्ट

पुस्तकीय ज्ञान से विद्यार्थी का मानसिक विकास होता है लेकिन विद्यार्थी के शारीरिक विकास के साथ अनुशासित जीवन जीने के लिये खेल आवश्यक होते हैं। केवल कक्षा कक्षीय शिक्षण से विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। खेल में एक ओर जहाँ जीत से मनोबल बढ़ता है वहीं दूसरी ओर हार का सामना करने से, जीवन की कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करने का हौसला बढ़ता है। 'स्व' से ऊपर उठ कर 'सर्व' के भाव से विद्यार्थी अपनी टीम के सदस्यों के साथ तथा प्रतिद्वन्द्वी सदस्यों के साथ भी अपनत्व व भाईचारा बनाये रखते हैं। खेल में निर्णय के अन्तिम पलों में हार को जीत में बदल सकने का माद्दा, उनमें एकाग्रता बढ़ाता है। खेलों में जीतने की रणनीति तय करने से किसी भी कार्य को योजनाबद्ध तरीके से धैर्यपूर्वक सम्पन्न करना सीखते हैं। आज्ञाकारिता का पालन व सहिष्णुता रखने से नेतृत्व क्षमता का गुण स्वत: विकसित होता है। श्रेष्ठ देने से अपनी सकारात्मक ऊर्जा को पहचानते हैं।

प्राचीन काल से ही गुरुकुल में विद्यार्थी को शिक्षा के साथ-साथ अनेक प्रकार के कौशल विकसित करने तथा युद्ध कलाओं जैसे द्वन्द्व युद्ध, धनुर्विधा आदि में निपुण बनाने के लिये प्रशिक्षण दिया जाता था। कालान्तर में कौशल व शारीरिक सुदृढ़ता विकसित करने के लिये किये जाने वाले अभ्यास समाप्त नहीं हुए वरन् खेलों के रूप में विद्यार्थी के दैनिक जीवन का हिस्सा बन गये।

भौतिकतावादी आधुनिक काल में रोजगार पाने की संभावनाओं को देखते हुए शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थी के शिक्षण पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अच्छे शैक्षिक प्रदर्शन और प्रतियोगी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने के लिये मानसिक योग्यता बढ़ाने को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

अधिकांश निजी विद्यालय अच्छे शैक्षणिक परिणाम देने की प्रतिस्पर्धा बनाये रखते हैं तथा शैक्षणिक कार्यों के लिये नियुक्त शिक्षक ही खेल प्रशिक्षक के रूप में कार्य देखते हैं। ऐसे में खिलाड़ी निजी तौर पर महँगा प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं और जिला स्तरीय, राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय खेल स्पर्धाओं में भाग लेते हैं। प्रशासनिक दृष्टि से भारत के विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर खेल प्रतिभाएँ खोजने व उन्हें प्रशिक्षित करने का कोई प्रावधान नहीं रखा गया है। जबकि चीन में बाल्यकाल से ही प्रतिभा पहचान कर खेलों का कड़ा प्रशिक्षण दिया जाता है और यही कारण है कि लंदन ओलंपिक-2012 में चीन 88 पदक जीत कर दूसरे

प्राचीन काल से ही गुरुकुल में विद्यार्थी को शिक्षा के साथ-साथ अनेक प्रकार के कौशल विकसित करने तथा युद्ध कलाओं जैसे द्वन्द्व युद्ध, धनुर्विधा आदि में निपुण बनाने के लिये प्रशिक्षण दिया जाता था। कालान्तर में कौशल व शारीरिक सुदृढ़ता विकसित करने के लिये किये जाने वाले अभ्यास समाप्त नहीं हुए वरन् खेलों के रूप में विद्यार्थी के दैनिक जीवन का हिस्सा बन गये। भौतिकतावादी आधुनिक काल में रोजगार पाने की संभावनाओं को देखते हुए शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थी के शिक्षण पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अच्छे शैक्षिक प्रदर्शन और प्रतियोगी परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने के लिये मानसिक योग्यता बढ़ाने को अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

स्थान पर रहता है जबकि भारत मात्र 6 पदक के साथ 55 वें स्थान पर रहा। यहाँ तक कि संसाधनों व अभावों से जूझ रहे छोटे-छोटे देशों जैसे- जमैका ने 12, इथोपिया ने 11 व कीनिया ने 7 पदक प्राप्त कर पदक तालिका में भारत से ऊपर स्थान प्राप्त किया।

भारत में खेलों को विद्यार्थी कॅरियर के रूप में नहीं लेना चाहते जबकि विदेशों में खेल प्रतिभाओं को अच्छा प्रदर्शन करने पर खिलाड़ियों को नियुक्ति दी जाती है और विद्यार्थी रोजगार के लिये खेलों के साथ अन्य रोजगार के विकल्प की तलाश नहीं करते। अत: अपने खेल को सुधारने व अभ्यास करने में वे अपनी पूरी ऊर्जा लगा देते हैं। खेलों के साधन, खिलाड़ियों के जूते, वेशभूषा व खान पान पर शोध एवं तकनीकी के आधार पर तय मापदण्डों के अनुसार प्रयोग किये जाते हैं।

वैश्विक खेलों का आधुनिक तकनीक और विज्ञान से विकसित स्वरूप होने के कारण खिलाड़ी में शारीरिक शक्ति के साथ मनोवैज्ञानिक सुदृढ़ता होना भी आवश्यक है। विकसित देशों में अनेक कम्पनियाँ, क्लब एवं लीग्स (Leagues) खेलों में अधिक से अधिक अनुदान देती हैं एवं बड़ा पूँजी निवेश कर खिलाड़ियों की जीत से बड़े मुनाफा कमाती हैं। इस तरह ओलंपिक खेलों में अमेरिका जैसे विकसित देशों का शीर्ष स्थान पर बने रहना निश्चित होता है। भारत में रोजगार की अपेक्षा रखे बिना खिलाड़ी केवल अपने देश का नाम रोशन करने की इच्छा शक्ति से तथा अपनी हिम्मत और लगन के बल पर यदि किसी अन्तर्राष्ट्रीय खेल स्पर्धा में स्थान पाते हैं उसके बाद ही सरकार द्वारा उन्हें पुरस्कार स्वरूप लाखों रुपये और आवासीय भूखण्ड प्रदान किये जाते हैं और अनेक कम्पनियाँ एवं संस्थाएँ उन्हें गाड़ियाँ व फ्लेट्स उपहार स्वरूप देते हैं किन्तु खेलों में आगे बढ़ने का जज्बा रखने वाले खिलाड़ी अपने पूरे कॅरियर में खेल संसाधनों, स्तरीय खेल प्रशिक्षण और स्तरीय खेल स्टेडियम के लिए मोहताज रहते हैं। खिलाड़ियों के आने जाने का खर्च उठाने व आवश्यक पोषण आहार लेने जितनी राशि भी उन्हें प्राप्त नहीं होती। कई खिलाड़ी परिवार की गरीबी व आर्थिक तंगी से त्रस्त होते हुए खेलों में अभ्यास करने व प्रतिभागिता करने के लिये अपनी जमीन जायदाद तक गवाँ देते हैं। महिला खिलाड़ी अनेक पारिवारिक और सामाजिक दबावों तथा बंदिशों को झेलते हुए भी खेलों में जीत का सपना साकार करने के लिये आगे बढ़ती हैं। कड़ी मेहनत व बुलन्द हौसले से खिलाड़ी सभी बाधाएँ पार कर राष्ट्रीय स्तर पर पहुँच तो जाते हैं किन्तु आगे जाने के लिये खेल संघों, परिषदों व कमेटियों की चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता के अभाव और राजनीतिक हस्तक्षेप की बाधाएँ पार नहीं कर पाते।

भारत में सरकार द्वारा खेल बजट निर्धारित मात्रा में आवंटित होता है किन्तु जिस तरह चीन में कानूनन खेलों पर खर्च किया जाता है वहीं भारत में खेलों पर खर्च को वरीयता नहीं दी जाती। 2016-17 में भारत का खेल बजट 15.92 खरब आवंटित किया गया वहीं चीन द्वारा खेलों पर 2016-17 में 204 खरब खर्च किये गये। चीन में 1995 में 6 लाख नये स्टेडियम बनवाये जबकि भारत में कुल 6 हजार आधुनिक स्टेडियम भी नहीं है।

इसी प्रकार भारत में खेलों के आयोजन में सरकार द्वारा काफी बड़े पैमाने पर खर्च किया जाता है। भारत में आयोजित राष्ट्रमण्डल खेलों में 70 हजार करोड़ खर्च हुए जिनमें दो ओलंपिक खेलों का आयोजन किया जा सकता था किन्तु ग्लासगो में इन्हीं राष्ट्रमण्डल खेलों के आयोजन पर मात्र 6 हजार करोड़ व्यय हुए। राष्ट्रमंडल खेलों के आयोजन में जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम के पुनरुद्धार पर ही 950 करोड़ खर्च कर दिये गये जबकि एक नया अत्याधुनिक क्रिकेट स्टेडियम तैयार करने में 50 करोड़ का व्यय आता है।

अन्तर्राष्टीय प्रतिस्पर्धाओं में प्रतिभागिता करना अधिकारियों, प्रशिक्षकों के लिये सामाजिक प्रतिष्ठा एवं आर्थिक लाभ पाने के अवसर के रूप में देखा जाता है। 2016 के रियो ओलंपिक में 119 सदस्यों का भारी भरकम खेल दल भेजा गया किन्तु इस दल ने 28 खेलों में से 15 खेलों में ही भागीदारी की। अधिकांश खेलों में 125 करोड़

की आबादी वाले देश भारत का कोई भी खिलाड़ी इनमें भाग लेने के लिए क्वालीफाइ करने के स्तर को भी नहीं छू सका।

ब्रिटेन के अधीन व गुलाम रहे देशों के बीच होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का 101 पदक के साथ दूसरा स्थान प्राप्त करना भारतीय खिलाड़ियों की खेल भावना को अवश्य प्रोत्साहित करता है किन्तु इनमें भागीदारी करके हम प्रत्येक बार ब्रिटेन की हुकुमत एवं ब्रिटिश महारानी के वर्चस्व की पुष्टि करते हैं।

1920 से 1980 तक मात्र एक खेल हॉकी में भारत ने 11 पदक प्राप्त किये। इसके 28 साल बाद 2008 में निशानेबाजी में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। धीरे-धीरे खिलाड़ियों के प्रयासों और मेहनत से सात और खेलों में पदक पाने की स्थिति बनी है जिनमें कुश्ती, मुक्केबाजी, टेनिस, बैडमिंटन, एथेलेटिक्स, स्कैवेश व नौकायान शामिल हैं। अधिकांश खेल अभी भी खिलाड़ियों के लिये नये ही बने हुए हैं।

खेलों के लिये अनुदान देने वाली संस्थाएँ, कॉरपोरेट सेक्टर व प्रतिभावान खिलाड़ियों पर निवेश करने वाली कम्पनियाँ यदि शिक्षण संस्थानों के साथ समन्वय करें तो खेल साधनों और खेल सुविधाओं को तरसती तथा आर्थिक तंगी से जूझती अनगिनत खेल प्रतिभाओं के शिखर तक पहुँचने की राह आसान होगी। भारत में शिक्षा के प्रारंभिक स्तर से ही प्रतिभाओं को खोजने तथा छात्रवृत्ति देकर उन्हें खेलने के लिये प्रोत्साहित करने में खेल प्रशिक्षकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षण संस्थानों में खेल नीति निर्धारित की जानी चाहिये जिसमें प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को पूरे शिक्षणकाल तक नियमित भत्ता मिले व खेल के संसाधन उपलब्ध कराये जायें। विद्यार्थियों को खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने तक शुरू में प्रतिनिधि खिलाड़ी के रूप में तथा बाद में प्रशिक्षक के रूप में रोजगार मिल सके। खेलों में अनियमितताओं को रोकने के कारगर कदम उठाये जाये तथा प्रशिक्षकों, चयनकर्ताओं तथा आयोजकों द्वारा विद्यार्थी को खेलों के लिये प्रोत्साहित करने की मनोवृत्ति बने, इसके लिये उन्हें पर्याप्त वेतन मिले तथा अपने खिलाड़ियों की सफलता में योगदान के लिए उन्हें भी सम्मान और आर्थिक लाभ मिलें। शिक्षण संस्थानों में खेल संघों, परिषदों में खिलाड़ी अपने साथ होने वाले भेदभाव, दुर्व्यवहार व उत्पीड़न की शिकायत दर्ज करवाने के लिये स्वतंत्र हो। उनकी शिकायतों को खेल प्राधिकरण तथा जाँच समितियों द्वारा गंभीरता से लेकर, स्पष्ट व सटीक कार्यवाही की जानी चाहिये। त्वरित कार्यवाही हो अन्यथा जाँच को लम्बे समय तक चलाने से, गवाहों को जुटाने व प्रतिबंधित करने में ही खिलाड़ी का अभ्यास छूट जाता है तथा खेल कौशल व क्षमता भी समाप्त हो जाते हैं। वर्तमान शिक्षा में पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा शामिल है किन्तु साथ में खेल विज्ञान व खेल मनोविज्ञान से भी विद्यार्थी को अवगत कराया जाना चाहिये। शिक्षा मंत्रालय एवं खेल संघ न्यूनतम अपेक्षित दूरी पर विद्यालय, महाविद्यालय से जुड़े खेल स्टेडियम या खेल गाँव बनवायें। खेलों को शिक्षा के साथ वरीयता मिलने पर ही खेलों में आधुनिक तकनीक व कौशल विकसित होगा तथा अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में भारत का सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन हो सकेगा।❑

(व्याख्याता रसायन शास्त्र, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर-राज)

BRICS देशों की टॉप 10 यूनिवर्सिटी में भारत के दो संस्थान

ब्रिक्स (BRICS) देशों की टॉप 10 यूनिवर्सिटीज की लिस्ट में भारत के इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, बोम्बे (IIT- Bombay) और इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइन्स, बेंगलुरु को भी शुमार किया गया है। आईआईटी बॉम्बे को टॉप 10 में 9वां और IISc को 10वां स्थान मिला है। टॉप 10 की यह सूची Quacquarelli Symonds द्वारा जारी की गई है। बता दें ब्रिक्स समूह के पाँच देशों (ब्राजील, रूस, इंडिया, चीन और साउथ अफ्रीका) की 300 से ज्यादा यूनिवर्सिटीज में से टॉप 10 की यह लिस्ट तैयार की गई है। वहीं IIT रुड़की भी ब्रिक्स देशों की टॉप यूनिवर्सिटीज की लिस्ट में 51वें स्थान पर अपनी जगह बनाने में कामयाब रही। इसके अलावा भारत की कुछ प्राइवेट यूनिवर्सिटीज BITS पिलानी, थापर यूनिवर्सिटी, सिम्बोयसिस इंटरनेशन यूनिवर्सिटी और ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी भी लिस्ट में शुमार की गई है।

इसके अलावा 300 से ज्यादा की लिस्ट में भी भारत के कई संस्थानों ने अपनी जगह बनाई है। आईआईटी दिल्ली 15वें स्थान पर, आईआईटी मद्रास 18वें स्थान पर, आईआईटी कानपुर 21वें स्थान पर, आईआईटी खड़गपुर 24वें स्थान पर, दिल्ली यूनिवर्सिटी 41वें स्थान, आईआईटी रुड़की 51वें स्थान, आईआईटी गोवाहाटी ने 52वें स्थान और यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता ने 64वें स्थान पर अपनी जगह बनाई है। टॉप 10 की लिस्ट में चीन की यूनिवर्सिटीज सबसे ज्यादा हैं। 10 में से 7 पोजिशन्स पर चीनी यूनिवर्सिटीज हैं। टॉप पोजिशन भी चीन की सिंघुआ यूनिवर्सिटी ने हासिल की है।

स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में – 'जीवन समस्त कलाओं से श्रेष्ठ है।' यदि हमें जीना नहीं आया तो हमारी सारी विद्या, सारा धन, सारा ऐश्वर्य व्यर्थ है। अच्छी तरह जीने के लिए ऐसा शरीर चाहिए जो जीवन के अंतकाल तक शक्तिमान और समर्थ रहे तथा जिसका उपयोग श्रेष्ठ कार्यों के लिए हो। ऐसा मन चाहिए जिसमें अच्छे विचार आयें तथा जो सेवा प्रेम, त्याग एवं परहित की भावना से ओत-प्रोत हो। ऐसी बुद्धि चाहिये जो भलाई और बुराई में अन्तर कर सके।

बाल विकास के लिए आवश्यक खेल

❑ बिरदी चन्द वैष्णव

खेलना बालक की जन्मजात प्रवृत्ति है, बालक का स्वाभाविक गुण है। खेलों से बालक का 'चोली दामन' जैसा रिश्ता है। बालक के खेल का स्वरूप उसकी बढ़ती आयु के साथ बदलता रहता है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में – 'जीवन समस्त कलाओं से श्रेष्ठ है।' यदि हमें जीना नहीं आया तो हमारी सारी विद्या, सारा धन, सारा ऐश्वर्य व्यर्थ है। अच्छी तरह जीने के लिए ऐसा शरीर चाहिए जो जीवन के अंतकाल तक शक्तिमान और समर्थ रहे तथा जिसका उपयोग श्रेष्ठ कार्यों के लिए हो। ऐसा मन चाहिए जिसमें अच्छे विचार आयें तथा जो सेवा प्रेम, त्याग एवं परहित की भावना से ओत-प्रोत हो। ऐसी बुद्धि चाहिये जो भलाई और बुराई में अन्तर कर सके।

प्रत्येक बालक पूर्ण स्वस्थ रहने और दीर्घायु होने की इच्छा रखता है। उत्तम स्वास्थ्य के बिना बालक सुखी जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। सच्चे सुख और जीवन के आनन्द का रहस्य व्यक्ति के उत्तम स्वास्थ्य में ही निहित है।

आज का बालक अपना जीवन मशीनी युग में जी रहा है वह भौतिक सुख सुविधाओं में जीवन का आनन्द ढूँढ रहा है पर वह इससे कोसों दूर ही रहा है।

बालक को किसी भी खेल में सहभागिता दिलाने से पूर्व उसकी रुचि का विशेष ध्यान रखना चाहिये। उसे मिलने वाली सुविधायें, साधनों, साथियों, परिस्थितियों और वातावरण जैसे तथ्यों पर आधारित है। इसी प्रकार कौन से व किस प्रकार के खेल में वह हिस्सा लेता है। यह बालक की रुचि, स्वभाव तथा उपरोक्त तथ्यों पर आधारित है। लेकिन सत्य यह है कि बालक को जब कभी खेलने का अवसर मिलता है, उस समय उसके चारों तरफ कैसा भी वातावरण हो, कैसी भी साधन सुविधायें उपलब्ध हों वह उन सब को अपने अनुकूल बना लेता है और खेलने में इतना मस्त और तल्लीन हो जाता है कि वह अपने आपको भूल जाता है। उसे थकान का एहसास नहीं होता वह भूख, प्यास तक की परवाह नहीं करता। इसलिए यह सच है कि बालक खेलने के लिए सदैव तत्पर व तैयार है। उसे इसके लिए सुअवसर चाहिये आवश्यक संसाधन चाहिए, साथ ही इन संसाधनों की बाल मन के अनुरूप उपयोगिता कर खेलों के माध्यम से शिक्षा देने वाला खेल शिक्षक चाहिये। तब ही बालक के सर्वांगीण विकास का हमारा सपना साकार होगा। खेलों के द्वारा एकाग्रता का विकास होता है उसकी सोचने व निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि होती है। पर्याप्त मनोरंजन होता है। उसमें पर्याप्त स्फूर्ति, दमखम, लचीलापन एवं गति जैसे गुणों का विकास होता है। जिससे बालक को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में आसानी रहती है।

'वैसे भी खेल बालक की आवश्यकता है तथा प्रत्येक बालक को भविष्य के स्पर्द्धापूर्ण जीवन के लिये संस्कारित करना परिवार व समाज की गरज है तथा खेलकूद के क्षेत्र में अन्तरराष्ट्रीय स्तर की स्पर्द्धाओं में श्रेष्ठ परिणाम अर्जित करना राष्ट्र की महती आवश्यकता है।'

बालक के सर्वांगीण विकास में शारीरिक शिक्षा व खेलकूल की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए इन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये सरकारी स्तर पर प्रयास की कुछ और आवश्यकता है। इस हेतु हमारे राष्ट्र में एक खेल नीति बनाई जानी चाहिये, स्वास्थ्य व शारीरिक शिक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण विषय को विद्यालय स्तर पर अनिवार्य घोषित कर इसे परीक्षा का विषय बनाया जाना आवश्यक है जिससे बालक अभिभावक, शिक्षक, संस्था प्रधान सभी सचेत रहेंगे तथा खेलों के माध्यम से बालकों के अच्छे स्वास्थ्य का निर्माण होगा व एक स्वस्थ परिवार, समाज, राज्य व स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण का हमारा सपना साकार होगा।

आज का बालक कल का युवा और खिलाड़ी है। इसलिए बाल क्रीड़ा और स्पर्द्धाओं को समृद्ध करने के लिए हम सबको खेल विकास में सहयोग और प्रोत्साहन देना अपनी नैतिक जिम्मेदारी और कार्य समझना चाहिये। तब ही उस बालक का जिसे हम राष्ट्र निर्माता के नाम से संबोधित करते हैं। सर्वांगीण विकास होगा, साथ ही हमारे राष्ट्र का नाम भी अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाली स्पर्द्धाओं की पदक तालिका में ऊपर होगा।

आज प्रतिस्पर्द्धा के इस युग में अधिकांश अभिभावक, बालक के अच्छे अंकों से पास होने को लेकर चिंतित हैं। उसके अच्छे स्वास्थ्य निर्माण को लेकर चिंतित नहीं है। मेरी राय में यदि बालक मेरिट में स्थान पा ले तथा उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो वह बेकार है, बिना स्वास्थ्य के सब सुख, प्राप्तियाँ धूल समान हैं। यदि आपने बालक के स्वास्थ्य पर ध्यान दिया तो वह विभिन्न क्षेत्रों में मेरिट में स्थान प्राप्त कर सकता है। अच्छा स्वास्थ्य, विभिन्न प्रकार के स्थाई व श्रेष्ठ परिणाम देने वाला होता है।

आशा है कि विषय पर चिंतन एवं मनन होगा कि कहीं हम अपने 'लाडले व इस राष्ट्र के साथ अन्याय तो नहीं कर रहे हैं।' ❑

(राज्य स्तरीय पुरस्कृत व.शा. शिक्षक)

National Testing Agency; not CBSE to conduct entrance exams

The proposal for the creation of an exclusive agency to conduct all entrance tests was cleared by the Union cabinet on November 10, 2017.

The Union cabinet, chaired by Prime Minister Narendra Modi, cleared a proposal for the creation of a National Testing Agency (NTA). An exclusive body, NTA will initially conduct entrance examinations currently being managed by the Central Board of Secondary Education (CBSE).

Setting up of NTA will reportedly benefit about four million students appearing in various entrance examinations. According to an official communique, the NTA would, over time, also relieve the All India Council for Technical Education (AICTE), the Indian Institutes of Technology (IITs), the Indian Institutes of Management (IIMs) and other agencies from the responsibility of conducting entrance tests and hence enabling them to focus on their core mandate.

Exams affected

CBSE currently conducts major higher education-related entrance tests apart from school exams at the Class X and Class XII level for CBSE-affiliated schools. The board also conducts five other tests including the National Eligibility Cum Entrance Test (NEET) for students aspiring to join medical colleges, the Joint Entrance Examination (JEE-Main) for admission to the elite IITs, and the National Eligibility Test (NET) on behalf of the University Grants Commission (UGC) for selecting professors to teach in colleges and universities, the Central Teacher Eligibility Test (CTET) for appointment of teachers across states, and the entrance test for Jawahar Navodaya Vidyalayas (JNVs). From 2019 onwards, NEET, JEE-Main, NET, CTET and entrance test for JNVs will be held twice a year by NTA.

Advantage NTA

Under the NTA, the entrance examinations will be conducted online, at least twice a year. According to the statement, this will give the aspirants adequate opportunity to bring out their best. The agency is also set to bring in high reliability, and standardised difficulty level to assess the aptitude, intelligence and problem-solving abilities of the students.In order to serve the requirements of the rural students, NTA would locate the centres at sub-district/district level and as far as possible would undertake hands-on training to the students.

About NTA

The proposal for a centralized testing agency was shared in the budget 2017-18 statement. The NTA will be created as a society registered under the Indian Societies Registration Act, 1860, and as an autonomous and self-sustaining premier testing organisation to conduct entrance tests for higher educational institutes. It will comprise an eminent educationist appointed by the ministry of human resource development as the chairman, a CEO who will be the director general and appointed by the Centre, and a board of governors including members from user institutions.

The director general will be assisted by nine verticals headed by academicians and experts.

The NTA will receive a one-time grant of Rs. 25 crores from the Centre to start its operation. Thereafter, it will function on a self-sustaining model.

खेल, बच्चों के लिए भोजन जितना ही महत्त्वपूर्ण है। यदि हमें शिक्षा द्वारा बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है, उसकी अन्तर्निहित क्षमताओं को उजागर करना है, तो निश्चित रूप से शिक्षा में खेलों के महत्त्व को स्वीकार करना होगा, पाठ्येतर गतिविधियों के रूप में खेलों को बढ़ावा देना होगा। खेलों के प्रति लोगों का नजरिया सदैव से यही रहा कि - 'पढ़ोगे लिखोगे बनोगे महान, खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब।' लेकिन आज लोगों की सोच में, दृष्टिकोण में धीरे-धीरे बदलाव आने लगा है।

खेल के सकारात्मक पहलू

❑ डॉ. बुद्धमति यादव

प्रतिद्वन्द्विता के युग में आज प्रत्येक अभिभावक की यही इच्छा रहती है कि उनका बालक अधिकाधिक अंकों अथवा प्रतिशत को प्राप्त करे ताकि उसे अपने भविष्य निर्माण अथवा कॅरियर बनाने में परेशानी ना हो। उसे 'अच्छा पैकेज' मिले। इस कारण आरम्भ से ही बालक पर पढ़ाई का इतना दबाव रहता है कि वह चाहकर भी खेल को अपने जीवन में स्थान नहीं दे पाता। परिणामत: बालक 'किताबी ज्ञान' तक ही सीमित होकर रह जाता है। ऐसी स्थिति में बालक का सर्वांगीण विकास कैसे सम्भव हो सकता है?

बच्चे और खेल एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हैं। बच्चे यदि खेल में रुचि न लें तो अवश्य ही चिंता का विषय बन जाता है। खेल, बच्चों के लिए भोजन जितना ही महत्त्वपूर्ण है। यदि हमें शिक्षा द्वारा बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है, उसकी अन्तर्निहित क्षमताओं को उजागर करना है, तो निश्चित रूप से शिक्षा में खेलों के महत्त्व को स्वीकार करना होगा, पाठ्येतर गतिविधियों के रूप में खेलों को बढ़ावा देना होगा।

खेलों के प्रति लोगों का नजरिया सदैव से यही रहा कि - 'पढ़ोगे लिखोगे बनोगे महान, खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब।' लेकिन आज लोगों की सोच में, दृष्टिकोण में धीरे-धीरे बदलाव आने लगा है। इसकी सबसे बड़ी वजह है मीडिया। मीडिया में भी विशेष रूप से सिनेमा ने खेलों को प्रचारित-प्रसारित करने में जो भूमिका निभाई है, वह सराहनीय है। खेलों द्वारा राष्ट्रप्रेम, देशप्रेम का जज्बा जगाने वाली 'लगान' और 'चक दे इण्डिया, भाग मिल्खा भाग, महिलाओं की खेलों में भागीदारी को लेकर 'दंगल', 'मेरी कॉम' जैसी फिल्मों ने भारतीय समाज में नव चेतना का संचार किया है। आज के युवाओं के लिए ये खिलाड़ी 'रोल मॉडल' बनने लगे हैं। आज का युवा केवल क्रिकेट जैसे खेल के प्रति ही आकर्षित नहीं है वरन् अन्य खेलों यथा-कबड्डी, कुश्ती, हॉकी, एथेलेटिक, शतरंज, बैडमिन्टन आदि में भी उतनी ही रुचि दिखाता है। इसकी एक बड़ी वजह है कि खेलों को भी युवा अपने कॅरियर के रूप में अपनाने लगा है। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर खेलों द्वारा वह अपना, अपने माता-पिता का, देश का नाम रोशन कर रहा है। 'पढ़ाई करके जितना नाम, धन और प्रसिद्धि पायी जा सकती है उतनी ही खेलों द्वारा भी पायी जा सकती है।' ऐसे विचार युवाओं को खेलों की ओर आकर्षित कर रहे हैं।

युवक ही नहीं युवतियाँ भी खेलों में पूर्ण रुचि दिखा रही हैं यथा – सायना नेहवाल, पी.वी. सिन्धु, एम.सी. मेरी कॉम, सानिया मिर्जा, दीपिका पल्लीकल, वीनेश फोगाट, मितालीराज, प्राची तेहरान, ज्वाला गुटटा, अश्विनी पोनप्पा, दीपा कर्माकर आदि। खेलों द्वारा महिला सशक्तिकरण को एक नया आयाम मिला है।

सिनेमा ने यदि लोगों में नवचेतना का संचार किया है, तो सोशल मीडिया – फेसबुक, वाट्सअप, ट्विटर, यू-ट्यूब आदि ने ब्लू व्हेल जैसे खेलों द्वारा, सेल्फी द्वारा खतरनाक, जानलेवा कृत्यों को बढ़ावा दिया है। मोबाइल का अत्यधिक इस्तेमाल युवाओं के लिए हर प्रकार से प्राणघातक, हानिकारक सिद्ध हो रहा है। ऐसी स्थिति में खेलों द्वारा बालकों को नई दिशा मिल सकती है। खेल के माध्यम से बालक एकांगी जीवन से निकल कर सामाजिक जीवन में प्रवेश करता है। सबके साथ मिल-जुलकर रहना, सामूहिक जिम्मेदारी निभाना, संघर्ष की भावना का विकास, सकारात्मकता, स्वस्थ प्रतियोगिता, 'टीम-भावना' से खेलना, धैर्य और अनुशासन में रहना, नेतृत्व गुणों का विकास तथा चरित्र निर्माण जैसे कार्य सहज ही खेल के माध्यम से सीख जाता है।

आज का विद्यार्थी पढ़ाई के साथ अनेक प्रकार के तनावों से ग्रसित है, जिसके कारण ना तो तन से और ना ही मन से ऊर्जावान दिखाई देता है। सारे दिन एक ही स्थान पर बैठकर पढ़ने, खाने सम्बंधी गलत आदतों के कारण, शारीरिक क्रियाओं के अथवा व्यायाम के अभाव में बालक मोटापे और आलस जैसी बीमारियों का अल्पायु में ही शिकार हो जाते हैं। थोड़े से चलने या दौड़ने पर ही थकान अनुभव होने, साँस फूलने जैसी शिकायत होने लगती है, किसी भी कार्य को करने में युवाओं जैसा उत्साह, रुचि नहीं दिख पाती। ऐसी स्थिति में खेल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पढ़ते-पढ़ते थकान होने पर खेल मनोरंजन करने का काम करते हैं। बालक के नीरस जीवन में प्रफुल्लता का संचार करते हैं। खेल बालक के शारीरिक विकास की नींव है इसलिए खेल शरीर को स्वस्थ और शक्तिशाली बनाता है, रक्तसंचार सुचारू रूप से होता है, माँसपेशियाँ और हड्डियाँ मजबूत बनती है। आलस्य दूर भागता है, मोटापा दूर होता है। पसीना निकलने से विषैले तत्त्व शरीर से बाहर निकल जाते हैं, जिससे शरीर चुस्त और फुर्तीला रहता है। पाचनक्रिया भी ठीक रहती है, इससे बालक को खुलकर भूख लगती है। जिसके कारण बालक की भोजन सम्बंधी समस्याएँ स्वत: ही दूर होने लगती है। 'जंक फूड' के स्थान पर पौष्टिक भोजन को जीवन में अपनाने लगता है।

'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।' शारीरिक क्रियाओं के अभाव में मस्तिष्क भी निष्क्रिय सा होने लगता है। स्मरण शक्ति खोने लगती है, एकाग्रता समाप्त होने लगती है। मन विचलित और स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। ऐसी स्थिति में खेल ही वो औषधि है, जो बालक को इन सब समस्याओं से निजात दिलाता है।

जीवन मूल्यों का अवमूल्यन आज की ज्वलंत समस्या है। विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता का दुर्गुण दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है, छोटे-बड़े का लिहाज, सामाजिकता का निर्वाह आदि व्यक्तिगत आजादी के नीचे दबने से लगे हैं। इसलिए भारतीय परिप्रेक्ष्य में जीवन मूल्यों के सन्दर्भ में संयुक्त परिवार की जो सकारात्मक भूमिका रहती थी, वही भूमिका 'खेल' भी निभा रहे हैं। खेल द्वारा जीवन मूल्यों को बालक सहज ही आत्मसात कर लेते हैं। धैर्य, अनुशासन, समयबद्धता, विनम्रता, आपसी प्रेमभाव, सहयोग और तालमेल, हर परिस्थिति में सामंजस्य बैठाने जैसे गुण स्वत: ही बालकों में आ जाते हैं। इन सबके साथ-साथ विद्यार्थी व्यक्तिगत जीवन में आने वाली विफलताओं यथा-मैरिट में ना आना, फेल हो जाना, माता-पिता की इच्छानुरूप लक्ष्य हासिल कर पाने में अक्षम होना आदि के कारण बालक 'आत्महत्या' जैसे जघन्य कृत्य भी करने को उद्धत हो जाते हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों से उबरने और उनका सामना करने की क्षमता भी खेलों द्वारा ही सम्भव है। संघर्षपूर्ण और तनावों से घिरे जीवन में खेल टॉनिक का काम करते हैं। सुख-दुख को समभाव से लेना सिखाते हैं।

किसी भी सफल व्यक्ति के जीवन पर प्रकाश डालें तो पाते हैं कि नाम, प्रसिद्धि और धन आसानी से नहीं मिलते, इसके लिए लगन, नियमितता, धैर्य और उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है शारीरिक श्रम। स्वस्थ जीवन और सफलता के लिए एक व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता होती है और खेल इसके लिए सबसे अच्छा तरीका है। बच्चों को खेलने से रोकने का अर्थ है उनके व्यक्तित्व के विकास में बाधक बनना। खेल ही वस्तुत: बच्चों के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, उनकी अन्तर्निहित क्षमताओं को उजागर करते हैं। अत: उन्हें खेलने के लिए सदैव प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि खेल लाख दुखों की एक दवा है, फिर हम इसे अपने जीवन का अंग बनाने से पीछे क्यों हटते हैं? हमारे जीवन का सबसे बडा सुख 'नीरोगी काया' है और यह खेलों को जीवन में शामिल करने पर ही सम्भव है।

खेलों के सकारात्मक पहलुओं ने भारत सरकार को भी बाध्य कर दिया है कि वह खेलों को प्रोत्साहन देने की दिशा में पहल करे। सभी स्तर पर सामूहिक प्रसास ही खेलों को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। ❑

(व्याख्याता- हिन्दी, जी.डी. कॉलेज, अलवर)

'शिक्षा और खेल' एक ऐसा विषय है जो खेल को व्यक्ति की सम्भावनाओं के प्रकट होने के अवसर के रूप मे प्रस्तुत करता है। समानता और स्वतन्त्रता के लोकतान्त्रिक मूल्यों के अभ्यास ने शिक्षा के अधिकार को स्वीकार किया फलस्वरूप आनुषंगिक रूप से खेल का अधिकार भी हमारे विचार-विमर्श के केन्द्र मे प्रकट हुआ। खेल को अधिकार अथवा मानव जीवन के अपरिहार्य अंग के रूप मे यदि निष्पक्षता से देखा जाय तो खेल न सिर्फ महिलाओं का सर्वसमावेशी विकास करने में बल्कि लैंगिक असंवेदनशीलता को कम करने की भी कारगर पद्धति है।

खेल और महिला

❑ **डॉ. रेखा यादव**

मनुष्य जीवन की विभिन्न विधाओं में खेल अथवा क्रीड़ा को महत्त्वपूर्ण माना गया है। खेल की अवधारणा शारीरिक दम-खम के साथ मनोरंजन और आनन्द से भी जुड़ी रही है इसलिए खेल एक विशेषाधिकार भी बन गया और यह भ्रान्ति समाज के मध्य व्याप्त रही कि खेल अथवा क्रीड़ा का सम्बन्ध एक विशेष वर्ग, प्रभुत्वशाली वर्ग से है।

आधुनिक मूल्यों के अभ्यास ने हमें समानता, स्वतन्त्रता एवं बंधुत्व के सूत्र दिये। सम्भव है कि ये सूत्र समाज मे पहले भी रहे हों परन्तु व्यापक स्तर पर इनका अभ्यास विश्व में मनुष्य की गरिमा के प्रश्न के साथ जुड़ा है। मनुष्य जो एक मनोदैहिक अस्तित्व भी है उसकी गरिमा की प्रतिस्थापना ने इहलौकिक मूल्यों को प्रतिष्ठित किया है और खेल भी एक ऐसा ही इहलौकिक मूल्य है जिसे वर्तमान में सभी मनुष्यो के लिए समानरूप से वांछनीय माना जाने लगा है।

समाजीकरण एवं संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में खेल के स्वरूप, नियम और खेलों के सम्बन्ध में प्रतिबन्ध निर्मित हुए। कहीं कम तो कहीं ज्यादा हम इस तुलना में ना जाये बल्कि इस तथ्य को केन्द्र में रखें कि महिला और पुरुष का भेद उसके स्वाभाविक लिंग-भेद पर आधारित न होकर जेण्डर भेद मे परिवर्तित हुआ और महिला जेण्डर को उसकी शारीरिक संरचनाओं में घेरने की कोशिश की गई फलत: खेल के क्षेत्र को महिलाओं के लिए चुनौतीपूर्ण माना गया। महिला की शारीरिक कोमलता, जनन सम्बन्धी क्षमता, बच्चो के पालन-पोषण, कुटुम्ब के सेवाभाव हेतु वांछित कोमल, सहृदय मातृत्व की अवधारणा ने खेल और स्त्री में दूरी पैदा कर दी। महिलाओं के मनोरंजन का क्षेत्र पुरुष के मनोरंजन क्षेत्र से सर्वथा पृथक माना जाने लगा और विशेषाधिकार सम्पन्न वर्ग में ही कभी-कभी यह अतिक्रमण दिखाई देता था अन्यथा खेल की उन्मुक्तता, स्वतन्त्रता, जोखिम लेने की क्षमता, जी-जान से शारीरिक बल के साथ लड़ने का अदम्य साहस, समूह की भावना, नेतृत्व की क्षमता बेहतरीन सार्वजनिक प्रदर्शन जैसे गुण जो खेलो में प्रकट होते हैं, महिलाओं में अप्रकट ही रह गये।

उपर्युक्त गुण मनुष्य में भौतिक अस्तित्व के विकास को प्रकट करते हैं और इसमें आत्म निर्धारण का पक्ष प्रबल है। महिलाओं में भी इन सभी गुणों की संभावनाएँ स्वाभाविक रूप से रही परन्तु समाजीकरण और संस्कृतिकरण मे जब-जब समानता एवं स्वतन्त्रता के मूल्यों को अनदेखा किया गया महिलाएँ आत्मनिर्धारित व्यक्तियों के समूह से बाहर होती गई। जिन महिलाओं ने इस क्षेत्र मे पहचान बनाने की कोशिश की उन्हें अपने बेहतर प्रदर्शन के साथ महिला होने के भी संघर्ष से जूझना पड़ा। इस प्रकार महिलाओं का अन्य सामाजिक क्षेत्रों की भांति खेल के क्षेत्र में भी दोहरा संघर्ष रहा। समाज में गरीब, अशिक्षित, वंचित वर्ग ने भी मनोरंजन के अपने तरीके गढ़े क्योकि रचनात्मकता मनुष्य का स्वभाव है जो ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को दिया है परन्तु स्वार्थ प्रेरित और अति व्यवस्था प्रेमी लोगों ने समाज को

इस तरह गढ़ा कि रचनात्मकता और मनोरंजन गढ़ने का पर्याप्त समय एवं अवसर सभी को नही मिल पाया फलस्वरूप खेल का उत्कृष्ट रूप जिसमें मनुष्य के विभिन्न पक्षों का सकारात्मक विकास हो तथा इन्द्रियपरक स्तर से उत्कृष्ट आनन्द प्राप्ति की चेष्टा हो खेल के माध्यम से महिलाओं को उपलब्ध नही हो पाये।

'शिक्षा और खेल' एक ऐसा विषय है जो खेल को व्यक्ति की सम्भावनाओं के प्रकट होने के अवसर के रूप मे प्रस्तुत करता है। समानता और स्वतन्त्रता के लोकतान्त्रिक मूल्यों के अभ्यास ने शिक्षा के अधिकार को स्वीकार किया फलस्वरूप आनुषंगिक रूप से खेल का अधिकार भी हमारे विचार-विमर्श के केन्द्र मे प्रकट हुआ। खेल को अधिकार अथवा मानव जीवन के अपरिहार्य अंग के रूप मे यदि निष्पक्षता से देखा जाय तो खेल न सिर्फ महिलाओं का सर्वसमावेशी विकास करने में बल्कि लैंगिक असंवेदनशीलता को कम करने की भी कारगर पद्धति है। आधुनिक सिनेमा में प्रस्तुत दंगल, चक दे इण्डिया, मेरी कॉम और सुल्तान जैसी लोकप्रिय सिनेमा की धारा हमें सोचने को मजबूर करती है कि बेटियाँ, बेटों से कम नहीं हैं बल्कि उनके स्त्रियोचित गुण जो स्वाभाविक लैंगिक भेद पर आधारित हैं जिसे समाज उपयोगी एवं वांछनीय मानता है, खेल खेलने से कहीं समाप्त नहीं होते। खेल से जुड़कर महिलाएँ और बालिकाएँ सेवा, प्रेम जैसे मूल्यों के साथ निर्भीक, स्वाभिमानी और स्वसुरक्षा के लिए भी आत्मनिर्भर रूप से तैयार होती है। आज महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार के कारण यदि ढूँढ़े जाये तो लड़का-लड़की को समान दृष्टि भाव से पालन-पोषण न कर पाना भी कारण है। लड़कियों में स्त्रियोचित गुण समाप्त हो जायेंगे यह आज भी शहरी व ग्रामीण जीवन दोनों में विद्यमान भ्रान्ति है। 'छोरियाँ छोरों जैसी हो जायेगी तो कौन ब्याह करेगा'? लूली-लंगड़ी हो जायेगी तो कौन ब्याह करेगा? फिल्म के संवाद नहीं है बल्कि हम सभी के कमजोर मन का मिथ्याभाव है जो लड़की के स्वतन्त्र मुखर व्यक्तित्व का अवरोधक बनता है तथा साहित्य और कवियों की कल्पना में अतिरंजित श्रृंगार प्रधान पात्रों से बाहर महिला का जाना सामाजिक चुनौती मानता है। समाज और संस्कृति दोनों गतिशील धारणाएँ हैं कुछ मूल्य अपने समयानुरूप श्रेष्ठ प्रदर्शन के बावजूद सार्वकालिक नहीं माने जा सकते। समय की गतिशीलता में हमें नये मूल्य गढ़ने होते हैं। महिलाओं का मुखर एवं स्वतन्त्र व्यक्तित्व होना तथा बाल सुलभ चंचलता और अबोधता से आगे बढ़ना आज की महती आवश्यकता है। आधुनिक शिक्षा ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में तो महिलाओं को सक्षम बना रही है परन्तु खेलों को लड़कियों के लिए आवश्यक बनाकर हम उन्हें शारीरिक संरचनाओं को सहज में लेने एवं साहसी बनने को भी प्रेरित कर सकते हैं। आज महिला सुरक्षा के नाम पर बाहरी प्रावधान किये जा रहे हैं उन्हें सुविधाएँ देने की बातें बढ़-चढ़ कर की जा रही हैं परन्तु शारीरिक एवं मानसिक रूप से उनका मजबूत होना हमारी योजनाओं में कम दिखाई देता है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हमारे देश को महिला खिलाड़ियों ने प्रतिष्ठा दिलवाई है परन्तु सैन्य क्षेत्र मे मात्र प्रवेश उनकी उपलब्धि नहीं होगी उन्हें उस अदम्य शौर्य का भी दुनिया को परिचय देना है जो उन्हें आज भी शरीर की विशिष्ट संरचनाओं से भिन्न व्यक्ति रूप से देखने की दृष्टि ही नहीं रखता।

खेल को जो शारीरिक तंदुरुस्ती एवं बल से जुड़ा था आरम्भिक समाज में शासक का कौशल माना जाता था परन्तु जैसे-जैसे तकनीक एवं दिमागी कौशल का विकास हुआ साहस सद्गुण का स्थान बौद्धिक चतुराई ने ले लिया फलस्वरूप समाज और शासन के नियन्त्रक ऐसे लोग भी बन गये जो न साहसी है और ना ही खेल भावना या स्पोर्टसमैनशिप के अधिकारी है। प्लेटो ने अपने राजनैतिक दर्शन के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ रिपब्लिक में संरक्षकों के लिए शिक्षा व्यवस्था की जो रूपरेखा प्रस्तुत की उसमे शरीर एवं आत्मा दोनों के समुचित समन्वय हेतु जिमनास्टिक एवं संगीत दोनों को आवश्यक माना है और यह दोनों सिर्फ पुरुषों के लिए नहीं महिलाओं के लिए भी आवश्यक कही गयी हैं जिससे महिलाओं को भी शासक एवं योद्धा वर्ग की भूमिका के लिए तैयार किया जा सके क्योंकि प्लेटो का मानना था कि सद्गुण शरीर का नहीं आत्मा का गुण है। स्त्री और पुरुष दोनों की आत्मस्वरूपता हमारी परम्परा का भी अभिन्न अंग है।

खेल निस्संदेह एक व्यापक जीवन मूल्य है और जो कोई भी चाहे साधारण मनुष्य हो या देवता उसे लौकिक नियम मानते हुए अपना उत्कृष्ट रूप धरती पर प्रदर्शित करना होता है। इस प्रकार खेल इहलौकिक मूल्यों का ऐसा श्रेष्ठ रूप है जो मनुष्य को चाहे स्त्री हो या पुरुष बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार करता है जिसमे शारीरिक कौशल, मानसिक कौशल, मनोदैहिक समन्वय के साथ, सहयोग, उदारता, सहिष्णुता और आत्मनिर्धारण की कला का जन्म होता है।

खेल खेलना छोटे बच्चों का स्वभाव होता है धीरे-धीरे हम उनमें लैंगिक भेद, जेण्डर भेद फिर नाना प्रकार के भय रोप देते हैं फलतः खेल हमारे स्वभाव से दूर हो जाता है। खेल प्रत्येक मनुष्य के जीवन का महत्त्वपूर्ण आयाम है जिसे शारीरिक व्यायाम एवं मनोरंजन से ज्यादा अथवा व्यापक रूप में जानना चाहिए। खेल हार-जीत से नहीं बँधा बल्कि खेलने के आनन्द से जुड़ा है। पाश्चात्य दार्शनिक सिजविक ने मनौवैज्ञानिक सुखवाद का खण्डन खेल के इसी तर्क के आधार पर किया कि खेल का वास्तविक आनन्द तभी प्राप्त होता है जब खिलाड़ी व्यक्तिगत सुख का भाव छोड़कर खेल खेलें। स्पोर्टसमैनशिप या खिलाड़ी भावना एक अद्भुत गुण है जिसमें खेल के नियम पालन का भाव अथवा सत्यनिष्ठा के साथ बेहतर प्रदर्शन किया जाता है। वर्तमान शिक्षा में ऐसी ही सकारात्मक प्रतिस्पर्द्धा आवश्यक है जिसके अभाव में युवाओं में कुंठा, तनाव, निराशा हावी हो रही है।❑

(प्रभारी दर्शन शास्त्र विभाग, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर)

वैश्विक स्तर पर खेल और हम

❑ प्रो. मधुर मोहन रंगा

हमारे पाठ्यक्रमों में महापुरुषों के व्यक्तित्व व कृतित्व का तो वर्णन होता है, परंतु खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त खिलाड़ियों के जीवन-वृत्त का ज्ञान भी विद्यार्थियों में होना चाहिये ताकि उन्हें यह आभास हो कि उन्होंने कठिन परिश्रम करके, आज उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। पाठ्यक्रमों में शैक्षणिक भ्रमण का तो वर्णन होता है, परंतु विभिन्न खेल-अकादमियों व खेल प्राधिकरणों की जानकारियों के साथ-साथ वहाँ भी भ्रमण होना चाहिये, ताकि कार्य स्थल पर प्रवास से विद्यार्थियों में अध्यांकन (Imprinting) के कारण उन्हें प्रोत्साहन व प्रेरणा मिल सके। खेलों में प्रवीणता प्राप्त खिलाड़ियों को केन्द्र व राज्य सरकार से रोजगार संबंधी सुविधाओं का भी विद्यार्थियों को संज्ञान होना चाहिये।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का समग्र विकास है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास के साथ-साथ व्यक्तित्व विकास व उसका परिवर्द्धन होता है। विद्यार्थियों को समसामयिक घटनाओं की जानकारी समय-समय पर हो। परंतु विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में शिक्षा, पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, संस्थाओं का वातावरण तो सहायक होता ही है साथ ही स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। इसी कारण बौद्धिक विकास की ओर अग्रसर होने के लिए शारीरिक श्रेष्ठता, एक आधारशिला की तरह होती है। यदि आधार सुदृढ़ हो तो इमारत सुंदर बनेगी, यही अवधारणा खेलों के लिए भी सटीक बैठती है। देश में खेलों के प्रोत्साहन हेतु भारत सरकार व राज्य सरकारें विभिन्न नीतियाँ बनाती हैं। खेलों को बढ़ावा देने तथा प्रतिभाशाली युवाओं को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार वर्ष 2001 में नई राष्ट्रीय खेल नीति बनाई। उससे पूर्व 1984 में राष्ट्रीय खेल नीति बनाई गई थी। 19 अगस्त, 1992 को घोषित राष्ट्रीय खेल नीति 1984 के राष्ट्रीय खेल नीति पर संकल्प का विस्तृत रूप है। इस खेल नीति को चार भागों में विभक्त किया गया है, पहले भाग में सम्पूर्ण देश में खेल का वातावरण बनाने के लिए प्रोत्साहन देना, दूसरे भाग में पूरे देश में खेल के विस्तार पर बल दिया गया है, तीसरे भाग में सम्पूर्ण देश में खेलों के प्रतियोगी स्तरों में सुधार पर बल दिया गया है, जबकि चौथे भाग में खेल प्रबन्धन पर प्रकाश डाला गया है। राष्ट्रीय खेल नीति की कार्ययोजना के प्रारंभिक भाग में वर्ष 1947 के पूर्व अंग्रेजों द्वारा संरक्षित तीन खेलों क्रमशः क्रिकेट, फुटबाल एवं हॉकी की चर्चा की गई है। इसके पश्चात् खेल परिदृश्य का वर्णन किया गया है। 11 सितम्बर, 2001 को केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 'राष्ट्रीय खेल नीति-2001' को स्वीकृति प्रदान करते हुए खिलाड़ियों को प्रोत्साहन राशि प्रदान करने, खेलों को बढ़ावा देने के लिए प्राइवेट कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी सुनिश्चित करने तथा महिला आदिवासियों व ग्रामीण युवाओं को प्रोत्साहन देने पर बल दिया गया।

खेल नीति में खेलों के आधार को मजबूत करने, खेलों में उच्चतम प्रदर्शन को प्राप्त करने, संरचनात्मक विकास एवं सुधारीकरण, खेल महासंघों व अन्य सम्बन्धित निकायों को सहायता देने, खेलों में वैज्ञानिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने व जनजागरण पर भी बल दिया गया है। उपर्युक्त खेल नीति के अतिरिक्त भारत में खेलों के विकास के लिए प्राधिकरण है। इसके अध्यक्ष, प्रधानमंत्री एवं उपाध्यक्ष खेल मंत्री होते हैं। यह एक स्वायत्तशासी संकाय है। यह निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों से खेल के सम्यक विकास के लिए धन एकत्रित करता है। खेल प्राधिकरण में एक महानिदेशक एवं सचिव का पद भी है। इसके विभिन्न सदस्यों में केन्द्रीय वित्त मंत्री, विदेश मंत्री, रक्षा मंत्री, गृह मंत्री, रेलवे मंत्री, संचार, आवास एवं निर्माण मंत्री, सूचना एवं प्रसारण मंत्री आदि सम्मिलित होते हैं। प्राधिकरण में वे लोग भी सम्मिलित होते हैं जो खेल के विकास में उल्लेखनीय योगदान देते हैं। ऐसे तीन व्यक्तियों को इसका सदस्य मनोनीत किया जाता है। प्राधिकरण के अन्य सदस्य दिल्ली के उपराज्यपाल, ओलम्पिक परिषद् (भारत) के अध्यक्ष, तीन सांसद, उद्योग एवं वाणिज्य मंडल का एक प्रतिनिधि व तीन उच्च कोटि के खिलाड़ी होते हैं। खेल प्राधिकरण केन्द्र सरकार के खेल विभाग के दिशा-निर्देशन में कार्य करता है। इसका मुख्यालय जवाहर लाल स्टेडियम, नई दिल्ली में स्थित है। राष्ट्रीय खेल नीति के क्रियान्वयन के लिए देश में उत्कृष्ट शारीरिक शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गई जैसे शारीरिक शिक्षा

महाविद्यालय, पूना, इन्दिरा गाँधी शारीरिक शिक्षा व स्पोर्ट्स विज्ञान संस्था, नई-दिल्ली, एमीटी शारीरिक शिक्षा व स्पोर्ट्स विज्ञान विद्यालय, नोएडा, सदगुरु शिक्षा सोसायटी शारीरिक महाविद्यालय जलगाँव, चंद्रशेखर शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय पूना, लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय ग्वालियर, विवेकानंद शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय रायचूर, कर्नाटक इत्यादि। खेलों को प्रोत्साहन के कारण ही हमें सीमित सफलताएँ प्राप्त हुई हैं। कुछ वर्तमान उल्लेखनीय उपलब्धियों का वर्णन करना प्रासंगिक होगा। सांसद एमसी मेरीकॉम ने सातवीं एशियन वुमन बॉक्सिंग चैम्पियनशिप का गोल्ड मेडल जीत लिया, उन्होंने फाइनल में उत्तर कोरिया की किम ह्यांग मी को हराया, उन्होंने पाँचवीं बार एशियन बॉक्सिंग का स्वर्ण जीता। भारतीय महिला हॉकी टीम ने एशिया कप, चीन को शूटआउट में 5-4 से हराया भारतीय शूटर जीतू राय और हीना सिद्धू ने आई एस एस एफ वर्ल्ड कप फाइनल में 10 मीटर एयर पिस्टल मिक्स्ड टीम इवेंट में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। हमें समर ओलम्पिक, राष्ट्रमण्डलीय खेल व एशियन खेलों में हमारी सहभागिता व पदक तालिका में दर्ज स्थिति का आकलन करना प्रासंगिक होगा।

ब्रिटेन में 2012 के समर ओलम्पिक में पदक तालिका में 85 देशों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, भारत 02 सिल्वर, 04 ब्रोंज कुल 06 पदक जीतकर 58 वें स्थान पर रहा। कुल 958 पदक विभिन्न देशों ने जीते जिसमें 302 स्वर्ण, 303 सिल्वर व 353 ब्रोंज थे। हमारी स्थिति का आकलन स्पष्ट है। 2016 के ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक में 88 देशों ने पदक तालिका में स्थान प्राप्त किया, जबकि भारत 11 सिल्वर 1 ब्रोंज मेडल जीत कर 67 वें स्थान पर रहा, इसी स्थान पर एक छोटा सा देश मंगोलिया भी रहा। वर्ष 2010 में चीन में आयोजित एशियन खेलों में भारत 14 गोल्ड, 17 सिल्वर, 34 ब्रोंज पदक जीतकर 6वें स्थान पर रहा जबकि चीन प्रथम व दक्षिण कोरिया दूसरे स्थान पर रहा। उल्लेखनीय है कि कुल 477 स्वर्ण, 479 सिल्वर व 621 ब्रोंज पदक विभिन्न देशों ने जीते थे। वर्ष 2014 में दक्षिण कोरिया में खेले गये एशियन गेम्स में भारत ने 57 पदक प्राप्त किये, जिसमें 11 गोल्ड, 09 सिल्वर, 37 ब्रोंज पदक थे, इसमें भारत 08 वें स्थान पर रहा जबकि चीन ने अपनी प्रथम स्थिति व दक्षिण कोरिया ने द्वितीय स्थिति को 2010 एशियन गेम्स के अनुसार बनाये रखी। स्कॉटलैण्ड में आयोजित (2014) राष्ट्रमण्डलीय 37 देशों ने पदक प्राप्त किये, भारत 15 स्वर्ण, 30 सिल्वर, 19 ब्रोंज जीतकर 05 वें स्थान पर रहा जबकि ब्रिटेन व आस्ट्रेलिया प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहें। कुल जीते गये 824 पदकों में से भारत की झोली में 64 पदक ही आये। परंतु 2010 में भारत द्वारा आयोजित खेलों में भारत ने 38 गोल्ड, 27 सिल्वर व 36 ब्रोंज मेडल जीत कर उल्लेखनीय दूसरा स्थान प्राप्त किया। कुल जीते गये 828 पदकों में से भारत ने 101 पदक प्राप्त किये, यह एक उपलब्धि कही जा सकती है। वैश्विक स्तर पर भारत की जनसंख्या व संसाधनों के सन्दर्भ में देखा जाय तो उपर्युक्त पराक्रम, पराक्रम नहीं कहा जा सकता, हमारे यहाँ खेल नीति है, विभिन्न खेलों के प्राधिकरण है, राज्य ओलम्पिक संगठन है, पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा है मुख्य रूप से विद्यालयी पाठ्यक्रम में, परंतु खेल-पाठ्यक्रमों को उच्चशिक्षा में शामिल करना प्रासंगिक होगा। हमारे पाठ्यक्रमों में महापुरुषों के व्यक्तित्व व कृतित्व का तो वर्णन होता है, परंतु खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त खिलाड़ियों के जीवन-वृत्त का ज्ञान भी विद्यार्थियों में होना चाहिये ताकि उन्हें यह आभास हो कि उन्होंने कठिन परिश्रम करके, आज उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। पाठ्यक्रमों में शैक्षणिक भ्रमण का तो वर्णन होता है, परंतु विभिन्न खेल-अकादमियों व खेल प्राधिकरणों की जानकारियों के साथ-साथ वहाँ भी भ्रमण होना चाहिये, ताकि कार्य स्थल पर प्रवास से विद्यार्थियों में अध्यांकन (Imprinting) के कारण उन्हें प्रोत्साहन व प्रेरणा मिल सके। खेलों में प्रवीणता प्राप्त खिलाड़ियों को केन्द्र व राज्य सरकार से रोजगार संबंधी सुविधाओं का भी विद्यार्थियों का संज्ञान होना चाहिये। परंतु उपरोक्त परिदृश्य के बाद भी जब भारी भरकम खेल -कारवां विदेशों में जाकर उल्लेखनीय प्रदर्शन नहीं करता है तब एक साधारण नागरिक के मन-मस्तिष्क में विचार शृंखला का जन्म होता है। प्रत्येक भारतीय का मन यह कोसने लगता है कि हमारी विश्वस्तरीय खेलों में स्थिति दयनीय क्यों होती जा रही है? कौन है इसका जिम्मेदार? क्या हमारी राष्ट्रीय खेल नीति, खेल प्राधिकरण या विभिन्न खेल संगठनों के बड़े-बड़े पदों पर काबिज राजनेता, प्रशासनिक अधिकारी, सांसद, मेम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव कॉउंसिल, मुख्यमंत्री या अन्य अधिकारी-गण? राज्यों के ओलम्पिक संगठनों पर नजर डालें तो ज्ञात होगा कि इन में अध्यक्ष के पद पर सांसद, मुख्यमंत्री, राजनेता, पूर्व मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री, सेवा-निवृत्त डी.आई.जी. आदि ने विशेषज्ञता दक्ष खेलों में प्रवीण खिलाड़ियों के स्थान पर इन पदों को सुशोभित कर रहे हैं? इसी प्रकार विभिन्न फेडरेशनों में भी विधायक, पुलिस अधीक्षक, सांसद व पूर्व सांसदों ने इस पदों की गरिमा बढ़ा रखी है! क्या भारत की गौरव मेरीकॉम, बॉक्सिग फेडरेशन की अध्यक्ष नहीं बन सकती है? क्या ओलम्पिक क्रिकेट संगठन के अध्यक्ष तेन्दुलकर नहीं बन सकते? यहाँ यह स्पष्ट करना प्रासंगिक होगा कि खेलों के प्रोत्साहन, उन्नति, प्रवीणता प्राप्त करने के लिए उसी खेल के उत्कृष्टता प्राप्त खिलाड़ियों को विभिन्न पदों पर होना चाहिये। एक तरफ हम विशिष्टता (Specilisation) की ओर अग्रसर होना चाहते हैं क्योंकि उस क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त व्यक्ति, उस विषय की गंभीरता व तकनीक को जानता है। हमारे यहाँ तो खेलों का प्रारंभिक ज्ञान न होने के बाद भी उन्हें, अध्यक्ष बना दिया जाता है। अत: वैश्विक स्तर पर खेलों में हमारी गरिमापूर्ण स्थिति बनाने के लिए विशेष योग्यता प्राप्त खिलाड़ियों को ही उसका प्रमुख बनाना चाहिये जैसे वर्तमान केन्द्र सरकार ने श्री राज्यवर्धन राठौड़ को खेल व युवा मामले के मंत्री का पद प्रदान कर रखा है। साथ ही हमें हमारे पारम्परिक खेलों को प्रोत्साहन देकर, उनमें श्रेष्ठता प्राप्त ग्रामीण बालकों का चयन कर उन्हें समुचित प्रशिक्षण प्रदान करें व अनवरत प्रयास करावे तो वो दिन दूर नहीं जब भारत वैश्विक स्तर पर अपनी उत्कृष्टता का प्रदर्शन करेगा। ❑

(विभागाध्यक्ष पर्यावरण विज्ञान विभाग सरगुजा विश्वविद्यालय,अम्बिकापुर-छ.ग.)

Role of Physical Education in schools

As can be seen, physical education contributes so much towards making a child grow into a healthy, intelligent, confident and level-headed adult. It can be rightly said that it's not just for individual growth, but for the improvement of the whole society, physical education should be made an important part of the school curriculum.

❑ **Dr. Sanjeev Kumar**

In recent decades, studies have highlighted concern about the fitness and participation in physical activities of young children. Physical education is crucial to health, fitness and well – being. It builds strength, maintains mobility and challenges body and mind. It provides a foundation for active living and, at its best, fosters interests which continue for a lifetime. A common phrase used by the general public is that "a healthy body leads to a healthy mind." One of the major health issues facing the United States is obesity, not only in adults, but many children as well. It is important that people strive for a healthy lifestyle to combat being overweight or obese. There are many benefits physical education provides today's students and society. Within a school setting, a physical education program can serve society in many ways if implemented and utilized appropriately. There are many areas physical education can serve and positively affect students and society. One is overall physical fitness. For example, physical education helps students and society improve skill-related components such as speed, agility, reaction time, balance, coordination, and basic movement patterns. Physical education helps students and society improve upon their strength, endurance, flexibility, and cardiovascular/respiratory activities. The American Heart Association recommends that if children and adolescents want to increase their life expectancies, they need to eat healthier and become physically active. Doing those two things will help children and adolescents defend against certain diseases and other health problems. Hence, the question: why is there little emphasis on the importance of physical education in today's schools?

According to Mood, Jackson, and Morrow (2007), children should be engaged in moderate physical activity for thirty minutes per day for five or more days per week and vigorous physical activity for twenty minutes per day for three or more days per week. Many educationists opine that physical inactivity is related to increased levels of body fat and as result childhood obesity. These re-

searchers argued that preventive measures should be taken at a young age in order to reduce future health risk factors. Furthermore, they found that students who engage themselves in daily physical activity within the school setting will achieve the health benefits they need to be physically fit more so than those students do not engage themselves in daily physical activity throughout the school day.

Physical education teachers are responsible for promoting a healthy and positive environment for learning. A healthy positive environment can be created and maintained especially if a physical education teacher provides constructive and positive feedback. In addition, if a physical education teacher is prepared, provides well-organized activities, and establishes clear expectations, students will usually respond to the environment in a positive manner. Physical education provides students the opportunity to enhance their physical, social, emotional, and cognitive development. This usually occurs during team sports, project adventure activities, problem-solving and physical fitness activities.

Regarding versatility, these researchers state that physical education teachers need to be innovative, flexible, and persuasive. They stated that physical education teachers have to rely on their creative skills to stimulate positive class environments regardless if they lack state-of-the-art equipment and/or supplies to stimulate their students. Furthermore, they pointed out that physical education teachers need to take a flexible and innovative approach to teaching because of the constant changes in the classroom and work environment as a result of budget cuts due to the recession. Finally, these researchers stated that physical education teachers have to have the ability to persuade their students that goals and objectives can still be met regardless of the lack of state-of-the-art exercise equipment and/or supplies. The ability of physical education teachers to be creative and provide a positive environment alleviates any recognition regarding state-of-the-art equipment and supplies within schools.

Widening opportunities for pupils to take part in physical activities in school and beyond will provid a broad and satisfying experience relevant to a lifetime of physical activity. School programmes are not normally sufficient to sustain healthy and active lifestyles. Generally, pupils need to take part in energetic physical activity more frequently than is possible in their curricular programme. Physical education which aims to develop motivation, competence, excellence and active participation should be central in promoting an active lifestyle. Raising achievement in physical education will help more pupils develop their physical talents to the full. High achievement brings personal success and opportunities to apply physical skills in a range of contexts. Success in physical education also enhances achievement in other areas of learning and is closely inter-related with intellectual and social development. It builds self-esteem, motivation, co-operation and concentration, and forms an important part of a balanced curriculum.

Approach and Role of Schools:

Schools play important role to provide physical education to the children. Very good programmes in physical education:

- are broad and balanced and included games, sports, gymnastics, dance and swimming;
- take account of pupils' prior learning and special educational needs;
- are enhanced by planned inserts in sport, dance and outdoor pursuits including any contribution from a visiting teacher;
- are clearly on teaching the relevant skills, knowledge and understanding;
- after opportunities for choice within the programme or through extracurricular activities;
- provide a clear framework of what was to be covered at each stage to ensure continuity and progression in pupils' learning; and
- incorporate advice about learning and teaching approaches, including direct teaching and learning through purposeful activity.

The following are examples of school initiatives to extend the physical education programme.

- Some schools organised programmes of sport and outdoor education to develop physical skills alongside planned opportunities for personal and social development.
- As part of its programme to promote positive behaviour, one school used the incentive of class visits to sports and leisure centres offering an attractive range of physical activities.
- A small rural school developed a school sports club with a committee of parents to offer pupils of all ages a range of

sports and outdoor pursuits. The committee had secured funding from national sports bodies to provide activities.

- Some schools organised 'House Competitions' in sport to generate interest in after-school activities.
- After investigating and ensuring traffic-free cycle routes, an urban school encouraged pupils to cycle to school, following simple but firmly administered safety guidelines.
- Some schools taught pupils traditional playground games or provided equipment to encourage active and enjoyable lunch-time games.
- Some schools encouraged pupils to demonstrate 'street sports', such as using roller boots or scooters, on an activity afternoon to interest other children in taking part.

Characteristics of Quality Physical Education:

As per Reston, V. A., the important characteristics of quality physical education are:

1. Opportunity to Learn:

(i) Instructional periods totaling 120 minutes/week (elementary) and 150 minutes/week (high and secondary school)

(ii) Qualified physical education specialist providing a developmentally appropriate program

(iii) Adequate equipment and facilities

2. Meaningful Content:

(i) Instruction in a variety of motor skills that are designed to enhance the physical, mental, and social/emotional development of every child

(ii) Fitness education and assessment to help children to understand, improve and/or maintain their physical well-being

(iii) Development of cognitive concepts about motor skill and fitness

(iv)Opportunities to improve their emerging social and cooperative skills and gain a multicultural perspective

(v) Promotion of regular amounts of appropriate physical activity now and throughout life

3. Appropriate Instruction:

(i) Full inclusion of all students

(ii) Maximum practice opportunities for class activities

(iii) Well-designed lessons that facilitate student learning

(iv) Out-of-school assignments that support learning and practice

(v) No physical activity for punishment

(iv) Use of regular assessment to monitor and reinforce student learning.

The top 10 reasons for quality physical education in schools are:

1. Regular physical activity helps to prevent diseases.
2. It promotes life time wellness.
3. Quality physical education can help to fight obesity.
4. It can help to promote lifelong physical fitness.
5. It provides unique opportunities for activity.
6. It teaches self management and motor activity.
7. Physical activity and physical education promote learning.
8. It makes economic sense.
9. Physical education is widely endorsed.
10. It helps to educate the total child.

Any physical activity in school needs proper planning and lesson. Very good physical education lessons in the schools have the following features:

- Teachers promote positive attitudes to physical education and show enthusiasm for physical activity. They use appropriate footwear and clothing for the gym or playing field.
- Good attention is given to discipline and safety.
- Lessons begin with an overview in which teachers share the purpose of the lesson with pupils and set expectations of what they can achieve. There are often a pattern of 'warm up' activities followed by teaching and opportunities for pupils to try out and practise skills.
- Demonstration, evaluation, discussion and brief reviews of progress are the important features of the programme.
- There are high levels of sustained, physical activity with little time spent in queuing or setting out apparatus.
- Teachers achieve a good balance between developing particular skills and applying them in contexts such as games, dances or gymnastics routines.
- Pupils are well-motivated and physically and mentally channelized.
- Teachers identify and pay good attention to differences in pupils' needs.
- Teachers observe pupils carefully. They praise pupils' efforts and provide them with clear and constructive feedback.

To improve the quality of assessment, teachers need to:

- be clear about what they intend pupils to learn and share these aims with pupils;

- ensure that tasks are chosen to reflect the aims and the expected level of performance;
- observe pupils' responses in relation to these aims;
- provide better feedback to pupils and involve them in self and peer assessment; and
- use manageable systems for recording progress, for example by recording the progress of the class through the programme and indicating pupils who make exceptional progress or need particular support.

Need of Physical Education in Schools:

Physical education plays a vital role in the students' development and growth. According to recent studies, physical well being of a student is directly related to his or her performance whether in class or in the office. The following points describe the need of the physical education in the schools in new era:

1. It's a link to good health.

The value of physical fitness can never be overstated. It's only in physical educational classrooms that students learn the value of taking care of themselves thru proper grooming, healthy eating and regular exercise.

2. It's a preventive measure against disease.

Many doctors today agree that obesity is a serious health risk. Without any form of diet management and control with the numerous processed food students intake everyday compounded by a sedentary lifestyle, a student's health can easily be at risk to many diseases like chronic heart disease, hypertension and diabetes. Physical education in school is a preventive measure to teach students the value of regular exercise.

3. It's a program for muscle strength and fitness.

Physical education develops the students' motor skills and hand-eye coordination. It also develops the upper body muscles through activities like doing push - ups as well the lower body muscles through stationary jumping jacks, 3min running and jumping exercises. Programs usually have core training exercises also like doing abdominal crunches.

4. It promotes academic learning.

Physical health allows students to function even better in classrooms. A good cardiovascular system developed from regular exercise promotes excellent blood and oxygen circulation. This means more nutrients circulate throughout the body which includes the brain. This circulation produces longer attention span during classes allowing longer concentration and absorption.

5. It builds self esteem.

Students who are active in physical activities like basketball, volleyball, martial arts and running just to name a few are more confident with themselves according to most social school studies. It's probably because of the self discipline and dedication to excel in a sport that brings out the best in students. In school, the physical education program introduces these sports activities to students allowing them to make choices.

6. It develops cooperation, teamwork and sportsmanship skill.

Most physical education programs are holistic. The program allows student to interact together to a common goal and that is to win and excel physically. It brings out the competitive sides of students working both body and mind but also promotes sportsmanship.

7. It promotes a physically active lifestyle.

The purpose of physical education is to instil in students, at an early age, the value of self preservation and choosing a lifestyle that is good for both the mind and body.

Importance of Physical Education in Schools:

Physical education promotes fitness, both physical as well as mental. The following points highlight the importance of the physical education in the schools in new era:

Fitness: Obesity is a very common problem faced by numerous American kids, which if not taken care of in time, can lead to many lifestyle diseases such as heart disease, cancer and diabetes in the long run. Engaging in physical activities help to burn calories and lose fat. Regular exercising builds muscles, makes the immune system strong and improves upon a child's stamina. This increases the fitness levels and keeps various diseases and health conditions in check.

Self-esteem: Physical activities help to keep a child active and focused. When a student participates in physical activities, he becomes fit and attractive, which helps to boost his self-esteem. After all everyone wants to look their best, regardless of age, isn't it?

Life Lessons: By participating in various sports, a student gets to learn so many things about life. A student wins some games and loses some, this makes him understand that winning and losing are a part of life and should be accepted with grace. When a student participates in team games, he learns that co-operating with others is very important if goals are to be achieved. Likewise, sports can teach so many life lessons to students and thus, help them evolve mentally.

Healthy Eating: During the theoretical physical education classes, a student is taught the importance of healthy eating. He gets to know how harmful some of his favorite foods such as pizzas, burgers, cakes and aerated drinks can be. A student is also made to understand that if he does not make healthy food choices, he can face many health problems in the future. Equipped with this knowledge, many students inculcate healthy eating habits, by giving up high sugar and fast foods and replacing them with healthy foods like fruits, vegetables and nuts.

Hygiene: Physical education classes lay great emphasis on maintaining hygiene. They teach students how to remain clean and germ-free at all times. Sex education is sometimes part of this curriculum too. The safe practices taught in these classes, if followed by the students throughout their life, will save them from many diseases.

Importance of Physical Education in Schools

Stress Management: Often times, students, particularly in their adolescent years, face various kinds of pressure and experience stress and anxiety. Participation in physical activities can act as a stress buster for them. Researches have shown that when a person exercises, the levels of cortisol, a stress hormone, get reduced. Moreover, a person who exercises every day, is able to sleep better, thus giving enough time to his body to repair and restore. This proves that by making an exercise routine, a student can remain stress-free, relaxed and concentrate more on his studies and other important things.

Productivity: Researches show that students who participate in physical activities have high energy levels and are more alert than those who led sedentary lifestyles. Due to these very reasons, the productivity of such students in various spheres of life, including their studies, improves considerably. As can be seen, physical education contributes so much towards making a child grow into a healthy, intelligent, confident and level-headed adult. It can be rightly said that it's not just for individual growth, but for the improvement of the whole society, physical education should be made an important part of the school curriculum.

Conclusion: It is the need of the hour to promote the physical education in the schools. It is discussed in the article the need and importance of the physical education in the schools in new era. Head teachers and other senior managers who place a high value on physical education should try to make efforts to improve the motivation of pupils and should be a very positive influence on the contribution of staff. In reviewing their role and effectiveness, head teachers will find the features of good practice. Monitoring and evaluation are the important weaknesses in the majority of schools. Senior managers require monitoring and evaluating learning and teaching and pupils' performance in physical education more rigorously to help ensure that pupils achieve their full potential. Key issues for education authorities to consider, include: ways of supporting schools and teachers through staff development in developing effective programmes; teaching and assessment in physical education; managing physical education; the provision and deployment of visiting teachers of physical education; and the ways of supporting schools in developing outward-looking programmes for physical education which expand extra-curricular activities and utilize community resources for sports, dance and outdoor education. ❑

(T.G.T. Non Medical, Primary Education Dept., Govt. Secondary School, Rugda, Dist- Solan, H.P.)

Education and Sports

❑ **Dr. TS Girishkumar**

There is a saying in En glish, all study and no play makes one a dull boy. This saying has a suggestive meaning, that indicates the importance sports in the life of a growing child. Sports and games are multipurposed, with the objective to overall development of personality.

Sports and Games

There is a difference between a sport and a game, which, though we are well aware, don’t seriously notice. Most often we club them together as just one event. A sport event, I mean something like athletics is often an individual event. Here the individual abilities are mostly counted to the highest. On the other hand, games are collective activities, or group activities. Interestingly, this aspect of games had given rise to many analogies and applications, especially in the world of Philosophy.

So, it shall be through games that one comes into experiencing sacrifices on a mundane level to experience co-existence, at the very early age itself. Such training, in the very school level can be directed to man making as well as mind making through Bharatiya Sanskriti. When the young students grow up and come across the reality with Bharatiya Sanskriti, it becomes normal and spontaneous for him to understand and go on.

Within the class rooms, the curricula are often planned to train the intellect of developing mind. As a matter of fact, we are yet to create a curriculum based on Bharatiya knowledge tradition and Dharma, hence the kind of training imparted is still European borrowed. Nonetheless, what really makes Bharatiya Sanskriti stand and continue through all these hard times is nothing other than the Bharatiya Dharma which continued to remain powerful and active. This makes sports and games an important ingredient in man making, society making and Nation building.

Future education

Everyone support the thought that Education ought to be man making. The details of this man making need to be discussed at length and in detail, which can turn into a treatise itself. The point here to ponder is a simple and relatively small one, it is about the overall development of a child, and overall becoming of a child into a man.

Man is a mind body mechanism as discussed in the European philosophical tradition. In Bharat, the mind body relation – combination is subtle

So, it shall be through games that one comes into experiencing sacrifices on a mundane level to experience co-existence, at the very early age itself. Such training, in the very school level can be directed to man making as well as mind making through Bharatiya Sanskriti. When the young students grow up and come across the reality with Bharatiya Sanskriti, it becomes normal and spontaneous for him to understand and go on.

and rather complete, but it shall take longer to present the Bharatiya perspective. For easy mention, European, hence. Mind, here should not be treated as the intellect, mind has to be seen as something beyond mere intellect and something as a storehouse of all lofty human existence. Thus, training the mind is rather more important than training the intellect alone, mere training of the intellect without the involvement of mind can only create machines and not humans.

Sports and games go a long way in shaping the human into a man. It begins with activities those lead to learning of co-existence, meaningful interaction with one another, learning to be selfless and eventually getting a tint of experience of Tyaga. The training of the intellect, which is predominantly European oriented won't be able to indicate lessons of Tyaga, without which Bharatiya society shall be meaningless. Tyaga shall not mean passivity: on the other hand, it is activity and strength.

One should not misconceive that through practicing Tyaga one becomes a glutton for all kinds of punishments, it may appear so on the face of it, but it requires immense strength from within to practice Tyaga. At the same time, we should also practice, 'Ahimsa Paramo Dharma, Dharmahimsa Tathaiva ca'. Ahimsa is Dharma undoubtedly, but himsa performed to save Dharma becomes a greater Dharma, because it is this Dharma that made us what we had been and what we are through tens of thousands of years and still remain live and vibrant.

This makes sports and games in the curricula a little more important than merely providing education. It seems that adequate importance is not extended to sports and games, and it shall therefore be serious, should one not give importance to sports and games. The case is no more, when people feel that those who go for sports and games are not very good students, actually those who involve in sports and games study better and shall become better citizens of the nation. ❑

(Professor of Philosophym, The Maharaja Sayajirao University of Baroda)

States asked to ensure free education for students with disability up to age 18

The HRD ministry has also asked the heads of the state education departments to ensure that all schools within their jurisdiction have inclusive classrooms with learning conducive atmosphere The Centre has asked all states to ensure that every child with special needs get free education up to the age of 18. For this, the Human Resource Development (HRD) ministry has asked all the states to make "suitable modifications" in the curriculum and examination system to meet the needs of such students. Provisions could include extra time to complete examination papers, use the facility of scribe or amanuensis, and exemption from second and third language courses.

Referring to the Rights of Persons with Disability (RPwD) Act, the HRD ministry has also asked the heads of the state education departments to ensure that all schools within their jurisdiction have inclusive classrooms with a conducive learning atmosphere to enable special children to study with others.

This move comes after increasing complaints across the country of schools denying admission to special children and discriminating against others on the rolls despite clear provisions in the RPwD Act to facilitate their education.The revised RPwD Act, 2016, came into effect from April 19 this year. "The appropriate government and local authorities shall ensure that every child with benchmark disability has access to free education in an appropriate environment till he attains the age of eighteen years in a special school or inclusive neighbourhood schools as per his choice," the ministry said a recent communication to the states, referring to the RPwD Act provisions which provide for it.

The ministry also asked the states to establish teacher training institutions and train and employ teachers, including those with special needs, who are proficient in sign language and Braille and trained to teach children with intellectual disability. It has also asked states to make necessary arrangements for training of professionals and other staff to support inclusive education at all levels of school education.

Under the RPwD Act, all state governments and union territory administrations are required to ensure that such children are provided with books, other learning materials and appropriate assistive devices free of cost up to the age of 18. They are also required to provide scholarships "in appropriate cases" to students with benchmark disability. The "Ministry has requested the States to consider issuing necessary instructions to the authorities and departments concerned to ensure compliance of the provisions of the RPwD Act".

भारतीय ग्रंथों रामायण, महाभारत, उपनिषदों आदि से स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में शिक्षा का प्रमुख ध्येय, चरित्र निर्माण रहा है। चरित्र निर्माण के कारण ही 'रामराज्य' जैसे समाज की स्थापना हो सकी। चरित्र निर्माण के कारण ही भारतीय संस्कृति, शस्त्र का प्रयोग किए बिना विश्व के सुदूर भागों में फैल सकी। जब चरित्र में कमजोरी आई तो देश परतन्त्र हुआ व संस्कृति में ठहराव आ गया। दुःख की बात है कि देश स्वतन्त्र होने के बाद भी हम शिक्षा के भारतीय उद्देश्यों की ओर नहीं लौट सके। यही कारण है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था समाज को पुष्ट करने की बजाय कमजोर कर रही है।

संतुलित हो शिक्षा नीति

❑ **विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी**

किसी भी सभ्य समाज में शिक्षा का ध्येय बच्चे में सदगुणों का विकास करना होता है। सदगुणों का विकास बच्चे को समाज में रहने योग्य बनाना होता है। सदस्यों में सदगुणों का विकास होने पर ही कोई समाज दीर्घजीवी हो सकता है। सद्गुणी समाज की संस्कृति का विस्तार होता है। भारतीय संस्कृति के उत्थान व पतन का अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट रूप से सामने आती है। भारतीय ग्रंथों रामायण, महाभारत, उपनिषदों आदि से स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में शिक्षा का प्रमुख ध्येय, चरित्र निर्माण रहा है। चरित्र निर्माण के कारण ही 'रामराज्य' जैसे समाज की स्थापना हो सकी। चरित्र निर्माण के कारण ही भारतीय संस्कृति, शस्त्र का प्रयोग किए बिना विश्व के सुदूर भागों में फैल सकी। जब चरित्र में कमजोरी आई तो देश परतन्त्र हुआ व संस्कृति में ठहराव आ गया। दु:ख की बात है कि देश स्वतन्त्र होने के बाद भी हम शिक्षा के भारतीय उद्देश्यों की ओर नहीं लौट सके। यही कारण है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था समाज को पुष्ट करने की बजाय कमजोर कर रही है।

असंतुलित शिक्षानीति

शिक्षा के संज्ञानात्मक लक्ष्यों की जाँच लिखित परीक्षा द्वारा हो सकती है। जबकि असंज्ञानात्मक लक्ष्यों का लिखित मूल्यांकन सम्भव नहीं होता। व्यक्ति का व्यवहार असंज्ञानात्मक गुणों का मूल्यांकन होता है। 1986 की शिक्षानीति के क्रियान्वयन के समय राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद् ने प्राथमिक स्तर पर पढ़ने-लिखने व लिखित ज्ञान को समझने की क्षमता विकसित करने के साथ साथ नियमितता, समय की पाबन्दी, स्वयं की स्वच्छता, वातावरण की स्वच्छता. श्रमशीलता, समानता, सहयोग, दायित्व-भाव, योगाभ्यास सत्यनिष्ठा, राष्ट्रीयता आदि का विकास करना चाहिए। समिति ने पढ़ने-लिखने व लिखित ज्ञान के न्यूनतम अधिगम स्तर तो तय किए मगर सोंपे गए कार्य की सीमाओं तथा समय की कमी की बात कहकर असंज्ञानात्मक ज्ञान के न्यूनतम अधिगम स्तर तय नहीं किए। परिणाम यह हुआ कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन के ध्येय से लाई गई शिक्षानीति, शिक्षा के मैकालयी चरित्र को बदलने के बजाय, उसे मजबूत करने वाली सिद्ध हुई।

प्राचीन भारत की शिक्षानीति

भारत में शिक्षानीति का निर्धारण अतिप्राचीन काल में हो गया था। ईशोपनिषद के श्लोक 11 से प्राचीन भारत की शिक्षा नीति का ज्ञान होता है। प्राचीन भारतीय शिक्षानीति में भौतिक विकास व चरित्र निर्माण को बराबर महत्त्व दिया गया था। शिक्षा को दो भागों, विद्या व अविद्या में बाँटकर आत्मज्ञान अर्थात चरित्र को मजबूत करने के बाद भौतिक विकास की बात कही गई थी। भौतिक उन्नति हेतु शिल्पशास्त्र से लेकर संगीत शास्त्र जैसे असंख्य विषयों की शिक्षा दी जाती थी। अमरकोश में विज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा गया है – '**मोक्षे धीर्ज्ञानम् अन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः**' अर्थात् मोक्ष के लिए उपयोगी जानकारी ज्ञान है तथा अन्य शास्त्रों व शिल्पों जैसे व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष, संगीत, नाटक, ललितकला आदि विज्ञान कहलाते हैं। नालंदा व तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों का विकास तत्कालीन भारतीय शिक्षानीति की सफलता का उदाहरण है। शिक्षानीति की सफलता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वैभवशाली बनने के साथ भारत प्रकृति संरक्षक बना रहा। भारतीय संस्कति की निरन्तरता का श्रेय तत्कालीन औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा व्यवस्था को ही जाता है।

शिक्षानीति का क्रियान्वयन

प्राचीन भारत में शिक्षा व्यवस्था समाज आधारित थी। शासक वर्ग का हस्तक्षेप नगण्य था। गुरु के सानिध्य में प्रकृति में दी जाने वाली शिक्षा पूर्णतः निःशुल्क थी। कथनी व करनी का अन्तर नहीं था। चरित्र निर्माण ही शिक्षा की पूर्णता मानी जाती थी। मैकाले ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को नष्ट कर दिया। शिक्षा व्यवस्था को पूर्णतः राज्याश्रित कर दिया। शिक्षा का ध्येय चरित्र निर्माण नहीं रहकर नौकरी पाना हो गया। स्वतन्त्रता के बाद. अंग्रेजी शासन व्यवस्था को ज्यों का त्यों अपनाकर मैकालयी शिक्षा व्यवस्था को मजबूत होने दिया गया। आज मैकालयी व्यवस्था अंग्रेजों के जमाने से अधिक मजबूत है। इंजिनियर, डॉक्टर या प्रशासक तैयार करना ही शिक्षा का एक मात्र ध्येय होगया है। लिखित परीक्षा ही मूल्यांकन का एक मात्र आधार हो गया है। चरित्र निर्माण की बात समय की बर्बादी माना जाता है।

शिक्षा संस्थानों से अधिक महत्त्व कोचिंग संस्थानों का है। कोचिंग संस्थानों का ध्येय, येन केन प्रकारेण, प्रतियोगिता परीक्षा की वैतरणी पार कराना है। सम्पूर्ण शिक्षातन्त्र कोचिंग संस्थानों का अप्रत्यक्षतः गुलाम बन गया है। खेल व प्रायोगिक कार्य मूर्खता माने जाते हैं। गहन चिकित्सा केन्द्र में भर्ती रोगी रूपी शिक्षा व्यवस्था से स्वस्थ समाज की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

जीवन्त हो शिक्षा व्यवस्था

मृत शेर को जीवित करने की पंचतन्त्र की कथा बताती है कि लिखित ज्ञान से जीवन नहीं चलता। समझ पैदा होना आवश्यक है। जब लेखक राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर में वनस्पतिशास्त्र में अधिस्नातक स्तर पर अध्ययन कर रहा था (1972-74) तब एक उपहास कथन प्रचलित था। कहा जाता था कि वनस्पति विज्ञान के विद्यार्थी पौधों को सूक्ष्मदर्शी के नीचे तो पहचान लेते हैं मगर पौधा सामने हो तो नहीं पहचान सकते। यह सैद्धान्तिक व व्यवहारिक ज्ञान के अन्तर को स्पष्ट करता है। सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी रखना व सुरक्षा नियमों का पालन करना दो अलग-अलग बातें हैं। बच्चों को सुरक्षा नियम याद करवाकर परीक्षा में प्रश्न पूछते हैं। बच्चा सारे नियम सही सही लिखता है। हम उसे पूरे अंक देते हैं। सड़क दुर्घटनाएँ बताती हैं कि सड़क सुरक्षा नियमों का व्यावहारिक उपयोग नहीं होता। आज परीक्षा परिणाम शिक्षक व विद्यालय की सफलता का मानदण्ड बन गए हैं। परीक्षा परिणाम के आधार पर ही उन्हें पुरस्कृत या दण्डित किया जाता हैं। प्रश्न यह है कि क्या परीक्षा परिणाम शिक्षा के लक्ष्य की प्राप्ति का प्रतीक है? हमारा लक्ष्य सुरक्षा नियम याद कराना नहीं सुरक्षा नियम का पालन करवाना है। सड़क सुरक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं अभ्यास से ही संभव है। नियमितता, समय की पाबन्दी, समानता, सहयोग, दायित्व-भाव, सत्यनिष्ठा, राष्ट्रीयता आदि गुणों का विकास खेलों, प्रायोगिक कार्य व अभ्यास से ही संभव है। पहले मुहल्ले में खेलते हुए बच्चा सामाजिकता सीख जाता था। आजकल तो गली मुहल्ले में खेलना संम्भव नहीं रहा। बच्चे का आधा दिन तो स्कूल आने जाने में चला जाता है जो बचता है उसे ट्यूशन चाट जाती है। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर सामाजिक उत्सवों से भी दूरी बना ली गई है। बच्चों के जीवन में आई रिक्तता में मोबाइल फोन घुसता जा रहा है। मोबाइल फोन का तेज विकास मानव सभ्यता को दीमक की तरह खोखला कर रहा है। बारूद के ढेर पर बैठी मानवता अपना बचाव कर पाएगी इस पर वैज्ञानिकों को भी शंका है। अस्तित्व बचाने के लिए मानव को पृथ्वी से बाहर अन्य ग्रह पर बसने की सलाह दी जाने लगी है।

नई शिक्षा नीति

नई शिक्षा नीति लाने का प्रयास किया जा रहा है। लिखित सूचनाओं से दबी शिक्षा व्यवस्था के स्थान पर खेल व प्रायोगिक कार्य व अभ्यास को महत्व मिले तो कार्य बनेगा। नीति के क्रियान्वयन हेतु नोटबन्दी जैसा क्रान्तिकारी कदम उठाना होगा। प्रशासन के क्षुद्र स्वार्थों से, शिक्षा को मुक्त करने हेतु, शिक्षा को स्वतन्त्र नियामक बनाना इस दिशा में पहला कदम हो सकता है। सरकारी इच्छा शक्ति के अभाव में लक्ष्मण स्वामी मुदालियर, दौलतसिंह कोठारी, प्रोफेसर यशपाल कपूर जैसे वैज्ञानिकों की शिक्षा-नीतियों के साथ, अन्तरिक्ष वैज्ञानिक कस्तूरी रंगन की शिक्षा नीति भी, मानव संसाधन मंत्रालय के पुस्कालय में दफन हो सकती है। ❑

(बाल साहित्य एवं विज्ञान विषयक लेखक)

महिला शिक्षा विकास की कुंजी

❑ डॉ. अनीता मोदी

किसी भी मानव समाज में महिलाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। महिलाएँ राष्ट्र के विकास में उतना ही महत्त्व रखती हैं जितना उस देश के खनिज पदार्थ, नदियाँ एवं खेतीबाड़ी का है। महिलाओं की शक्ति का समुचित उपयोग करने एवं सम्मानीय स्थान देने पर वे राष्ट्र के विकास को महत्त्वपूर्ण ढँग से प्रभावित कर सकती हैं। देश में बालिका शिक्षा के विकास व संवर्धन हेतु सर्वशिक्षा अभियान, शिक्षा गांरटी योजना, आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना, राष्ट्रीय सारक्षरता मिशन, कस्तूरबा गाँधी शिक्षा योजना, एकल बालिका निशुल्क शिक्षा योजना, बालिका समृद्धि योजना, राष्ट्रीय बालिका शिक्षा कार्यक्रम व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एवं प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों, नीतियों व योजनाओं की वजह से देश में महिला साक्षरता में आशाजनक वृद्धि हुई है।

राष्ट्र प्रणेता स्वामी विवेकानन्द ने सच ही कहा था कि, 'महिला की स्थिति में सुधार लाये बिना दुनिया का कल्याण संभव नही है। एक पंख से चिड़िया उड़ान नही भर सकती।' नि:संदेह किसी भी राष्ट्र के विकास व उत्थान में महिलाओं का योगदान महत्त्वपूर्ण है। ज्ञातव्य है कि महिलाएँ ही परिवार, समाज व देश की प्रगति की नींव हैं। नींव को सशक्त व मजबूत बनाये जाने पर ही सुदृढ़, विशाल व भव्य इमारत की कल्पना को साकार किया जाना संभव है। राष्ट्रीय समिति की रिपोर्ट ने भी सामाजिक, आर्थिक विकास में महिलाओं के योगदान को रेखांकित करते हुए कहा है कि 'किसी भी मानव समाज में महिलाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। महिलाएँ राष्ट्र के विकास में उतना ही महत्त्व रखती हैं जितना उस देश के खनिज पदार्थ, नदियाँ एवं खेतीबाड़ी का है। महिलाओं की शक्ति का समुचित उपयोग करने एवं सम्मानीय स्थान देने पर वे राष्ट्र के विकास को महत्त्वपूर्ण ढँग से प्रभावित कर सकती हैं। महिलाओं पर सामाजिक प्रथाओं और परम्पराओं के प्रतिबंध होने के कारण उन्हें समाज का एक विकल अंग माना जाता रहा है। अत: इस वर्ग को सहायता पहुँचाने की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि वह राष्ट्रीय जीवन में पूर्ण और समुचित भूमिका का निर्वहन कर सके।'

किन्तु विड़म्बना है कि आजादी से पूर्व देश की महिलाएँ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व सामाजिक कुप्रथाओं का दंश झेल रहीं थीं। महिलाओं को शिक्षा, उन्नति, विकास व निर्णयाधिकार से वंचित रखते हुए उनकी भूमिका को गौण बनाया गया। निरक्षरता के कारण महिलाएँ भेदभाव, शोषण, लिंग भेद असमानता व उपेक्षा का शिकार होती रही व इनको सहते-सहते असहाय व नि:शक्त हो गई। यही नहीं, महिलाओं को उनकी योग्यता व क्षमताओं के विकास हेतु आवश्यक अवसरों व सुविधाओं से वंचित रखा गया । दुखद पहलू है कि स्वतंत्रता से पूर्व महिलाओं की स्थिति शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, आय व निर्णयाधिकार संबंधी मापदण्डों के आधार पर निराशाजनक व चिन्ताप्रद थी।

स्वतंत्रता के पश्चात, देश में महिलाओं की स्थिति में अपेक्षित सुधार लाने, उन्हे विभिन्न प्रकार के दंशों से मुक्त करवाने तथा उनके सामाजिक-आर्थिक विकास को सुनिश्चित करने के लिए 'महिला शिक्षा' को प्राथमिकता प्रदान की गई। नि:संदेह शिक्षा विकास का आधारमूलक

सत्य है। विश्व स्तर पर भी यह तथ्य अंगीकार किया गया है कि शिक्षा से सशक्तीकरण होता है व शिक्षा मानव के जीवन स्तर को उन्नत करती है। विभिन्न देशों के उदाहरणों से स्पष्ट है कि जिस देश की महिलाएँ जितनी अधिक शिक्षित व जागरूक हैं वह देश उतना ही विकसित व समुन्नत है। अत: यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है कि शिक्षित नारी ही समाज, देश व परिवार के विकास की आधारशिला है। शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए यूनेस्को के डायरेक्टर जनरल फ्रेडरिको मेयर ने उचित ही कहा है कि, 'जीवन पर्यन्त शिक्षा के बिना विकास संभव नहीं है।' वस्तुत: महिलाओं को शिक्षित करके ही इनकी सुप्त चेतना, शक्ति, सामर्थ्य व क्षमताओं को नई दिशा प्रदान करके इनका विकास किया जाना संभव है। यह सर्वविदित ही है कि महिलाओं का विकास होने पर देश के विकास के पहिये स्वत: ही घूमने लग जाते हैं। यह निर्विवाद तथ्य है कि शिक्षा मानव-जीवन का सबसे आवश्यक संस्कार और सामाजिक आर्थिक व सांस्कृतिक गतिशीलता का सशक्त माध्यम है।

'सा विद्या या विमुक्तये' जैसी उक्ति भी शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करती है। शिक्षा ही तमाम बंधनों, अंधविश्वासों व कुरीतियों से मुक्ति पाने एवं नई दृष्टि व समझ का निर्माण करने का एकमात्र विकल्प है। स्पष्ट है कि महिलाओं को शिक्षित करके ही असमानता, शोषण व अत्याचार के चंगुल से मुक्त करवाकर विकास की दौड़ में उनकी भागीदारी को बढ़ाया जाना संभव है। महिलाएँ परिवार, समाज एवं राष्ट्र की रचना व विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यही नहीं, माँ के रूप में, आगामी पीढ़ियों के नैतिक मूल्य और सामाजिक लोकाचार की संरक्षिका के रूप में महिलाओं का योगदान सर्वविदित है। शिक्षित महिलाएँ इन सब भूमिकाओं का निर्वहन अधिक समुचित, प्रभावी व सही ढँग से कर सकती है।'एक लड़के की शिक्षा एक व्यक्ति की शिक्षा है, परन्तु एक लड़की की शिक्षा संपूर्ण परिवार की शिक्षा है।' नि:संदेह रूप से एक लड़की को शिक्षा से वंचित रखने की कीमत परिवार, समाज व देश सबको चुकानी पड़ती है।

महिलाओं की शिक्षा व उनकी क्षमताओं का संवर्धन न केवल अपने आप में महत्त्वपूर्ण है बल्कि देश के आर्थिक व समग्र विकास का एकमात्र व सर्वोत्तम तरीका है। देश के प्रथम उपराष्ट्रपति व शिक्षाशास्त्री डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने तो यहाँ तक कहा था कि, 'शिक्षित महिला के बिना शिक्षित पुरुष हो ही नहीं सकता।' एक चीनी कहावत में भी शिक्षा के महत्त्व को उजागर करते हुए कहा गया है कि ''किसी राष्ट्र को एक वर्षीय योजना बनानी हो तो कृषि को, दस वर्षीय योजना बनानी हो तो वन को, सौ वर्षीय योजना बनानी हो तो शिक्षा को प्राथमिकता दे।''

वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी के युग में निरक्षरता मानव जीवन के लिए अभिशाप है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने तो निरक्षरता को मानव जीवन का कलंक बताते हुए महिला शिक्षा की पुरजोर वकालत की। स्वामी विवेकानंद ने भी महिला शिक्षा की अवहेलना को पाप बताते हुए कहा कि साक्षरता से ही महिलाओं और कमजोर वर्गों को समर्थ बनाया जा सकता है।

वास्तव में, महिलाओं को साक्षर व शिक्षित करके ही उन्हें अपने अधिकारों के बारे में जागरूक बनाया जाना संभव है। अनेक अध्ययनों से इस तथ्य की पुष्टि हुई है कि शिक्षित महिलाएँ अपने परिवार के साथ जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाते हुए विकास के विभिन्न आयामों की प्राप्ति में सक्रिय योगदान देती हैं। महिला शिक्षा के और भी कई लाभ हैं। महिला शिक्षा निर्धनता उन्मूलन, उत्पादकता वृद्धि व प्रजनन दर में कमी लाने का एक सशक्त व प्रभावी हथियार है। अनेक शोध अध्ययनों से यह तथ्य साबित हो चुका है कि महिला शिक्षा व जनसंख्या वृद्धि दर में ऋणात्मक सहसंबंध है। इस प्रकार से महिला शिक्षा का विकास व विस्तार करके बढ़ती जनसंख्या की प्रवृति को नियंत्रित किया जाना संभव है। अनेक विद्वानों ने अधिकांश आर्थिक-सामाजिक समस्याओं का समाधान महिला शिक्षा को स्वीकार किया है। इसी भांति पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने भी देश के विकास व समृद्धि के लिए शिक्षा को सर्वाधिक जरूरी बताया है। चूंकि बच्चे की प्रथम शिक्षिका 'माँ' ही है, अत: महिला शिक्षा का महत्त्व द्विगुणित हो जाता है।

विश्व बैंक के प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री समर्स ने देश में महिला शिक्षा के महत्त्व को

दर्शाने हेतु एक अनुमान प्रस्तुत किया है। इस अनुमान के अनुसार देश में 100 बालिकाओं की शिक्षा-सुविधा पर 32,000 डॉलर का खर्च होगा। इन 100 बालिकाओं को शिक्षित करने पर 43 शिशुओं व दो माताओं की मृत्यु तथा 300 शिशुओं के जन्म पर रोक लगेगी। इन लाभों का सकल मूल्य 52,000 डॉलर होगा। इस प्रकार से मात्र 100 बालिकाओं को शिक्षित करने पर 20,000 डॉलर का शुद्ध लाभ होगा। इसके अतिरिक्त महिला शिक्षा का उत्पादकता, जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण व स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सर्वविदित तथ्य है कि महिलाओं को शिक्षित किये बिना उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ना संभव नहीं है। महिलाओं को सशक्त, स्वावलम्बी व आत्मविश्वासी बनाने में शिक्षा का योगदान महत्त्वपूर्ण है। महिला शिक्षा से ही महिला सशक्तीकरण की प्राप्ति संभव है। महिला सशक्तीकरण होने पर ही परिवार, समाज तथा राष्ट्र के चहुँमुखी विकास में पुरुषों के साथ महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जा सकती है। इस प्रकार से महिला सशक्तीकरण से न केवल महिलाओं को अपितु सम्पूर्ण समाज व देश को लाभ होगा, आदर्श नागरिकों का निर्माण होगा। नोबल पुरस्कार विजेता प्रो. अमर्त्य सेन ने भी अपनी पुस्तक 'इंडिया, इकोनोमिक डवलपमेन्ट एण्ड सोसियल ओपोर्च्यूनिटी' में महिला सशक्तीकरण का समर्थन करते हुए लिखा है कि 'महिला सशक्तीकरण से न केवल महिलाओं के जीवन में निश्चित रूप से सकारात्मक असर पड़ेगा बल्कि पुरुषों व बच्चों को भी इसका लाभ मिलेगा।' चीन में आयोजित चौथे विश्व महिला सम्मेलन में भी यह स्वीकार किया गया कि शिक्षा से सशक्तीकरण होता है। जीवन पर्यन्त व निरन्तर शिक्षा मानव जीवन की उन्नति के लिए आवश्यक है।

महिला शिक्षा को बढ़ावा देते हुए संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने भी अपने विचार के पूर्व प्रकट करते हुए कहा था कि, 'स्वस्थ, शांतिपूर्ण और समतामूलक समाज के विकास के लिए शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक समानता स्थापित करने का हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक स्वास्थ्य, सामाजिक एवं विकास संबंधी लक्ष्यों को हासिल नहीं किया जा सकता है। दुनिया में आज भी बेटियों को बेटे की तरह ही शिक्षा प्राप्त करने का पूरा अधिकार है। वर्तमान विकास संबंधी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बालिकाओं में शिक्षा का प्रसार जरूरी है। बालिकाओं की शिक्षा के प्रसार से न केवल आर्थिक उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है बल्कि मातृत्व और मृत्यु दर में कमी लायी जा सकती है।'

देश में बालिका शिक्षा के विकास व संवर्धन हेतु सर्वशिक्षा अभियान, शिक्षा गांरटी योजना, आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना, राष्ट्रीय सारक्षरता मिशन, कस्तूरबा गाँधी शिक्षा योजना, एकल बालिका निशुल्क शिक्षा योजना, बालिका समृद्धि योजना, राष्ट्रीय बालिका शिक्षा कार्यक्रम व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एवं प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों, नीतियों व योजनाओं की वजह से देश में महिला साक्षरता में आशाजनक वृद्धि हुई है।

इन सब उपलब्धियों के बावजूद भी महिला साक्षरता की दिशा में अपेक्षित सफलता हासिल नहीं हो पाई है। आज भी शिक्षा के संदर्भ में उच्च लैंगिक अन्तर बना हुआ है तथा निरक्षर महिलाओं की संख्या काफी अधिक है। महिला साक्षरता व शिक्षा के मार्ग में अनेक अवरोधक हैं जिनको दूर करके ही अपेक्षित सफलता प्राप्त की जा सकती है। सर्वप्रथम, गरीबी व निम्न आय स्तर महिला शिक्षा के लिए सबसे बड़ा रोड़ा है। देश की लगभग 26 करोड़ जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है। इन गरीब परिवारों के लिए रोजीरोटी सबसे प्राथमिक है, बालिका शिक्षा की व्यवस्था का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। सामाजिक-सांस्कृतिक विसंगतियों व कुरीतियों की वजह से भी बालिका व महिलाएँ शिक्षा से वंचित रह जाती हैं। बाल-विवाह, पर्दाप्रथा, दहेजप्रथा एवं शिक्षा पर व्यय को अनुत्पादक व फिजूलखर्ची मानना जैसे कारण भी बालिका शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। 'बेटी पराया धन है' यह संकीर्ण मानसिकता भी बालिका शिक्षा को हतोत्साहित करती है। इसके अतिरिक्त बालिका विद्यालयों की कमी, विद्यालयों की दूरी, पाठ्यक्रमों में रोचकता व समसामयिकता का अभाव, घरेलू दायित्व एवं अभिभावकों में जागरूकता का अभाव जैसे तत्व भी बालिका शिक्षा के प्रसार में बाधा पहुँचाते हैं।

देश के विकास की कुँजी महिला साक्षरता व शिक्षा ही है, हमें इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए महिला साक्षरता के मार्ग में अवस्थित विभिन्न अवरोधों व बाधाओं को दूर करने के लिए प्रभावी नीति बनाकर उसके सफल क्रियान्वयन हेतु हर संभव प्रयास करने होंगे। लड़कियों के प्रति भेदभाव, उपेक्षा व दोयम दर्जे के व्यवहार को परिवर्तित करना जरूरी है। इस परिवर्तन के लिए समाज के सभी वर्गों का सहयोग, संवेदना व सहानुभूति परम आवश्यक है। गैर सरकारी संगठन व स्वयंसेवी संगठनों को भी महिला शिक्षा में सक्रिय योगदान हेतु प्रेरित किया जा सकता है। ये संगठन महिलाओं में उनकी क्षमता, योग्यता व अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। निस्संदेह महिला शिक्षा को प्रोन्नत करके देश पुन: विश्वगुरु के पद पर आसीन हो सकता है। ❑

(प्रवक्ता, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय (पी.जी.) कॉलेज, खेतडी, राजस्थान)

‘अध्ययन, आत्मसम्मान और स्वाभिमान का स्तर सुधारने में मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना बेहद आवश्यक है जो विकास के सबसे प्रमुख पहलुओं में शुमार है।’ आज दुनिया एक छोटे गाँव में सिमट गई है और तमाम भाषाओं की प्रासंगिकता बनी रहेगी। ऐसे में विचारों के आदान-प्रदान में अध्ययन की विधा के रूप में भाषा, साहित्य और अनुवाद के साथ सांस्कृतिक अध्ययन अपरिहार्य हो गए हैं। हमें ऐसे अच्छे शोध कार्यों की दरकार है जिनका लक्ष्य उत्कृष्ट समालोचना, ऐतिहासिक, सैद्धांतिक और सृजनात्मक विद्वत्ता की हमारी परंपरा को सशक्त बनाने के साथ ही उसे और सक्षम बनाना हो। हमें भाषा और साहित्य में अनुप्रयुक्त शोध पद्धतियों और आधारभूत अवधारणाओं की सोच भी विकसित करनी होगी। शोध और भाषाई अध्ययन एवं अध्यापन के साथ जुड़ी सामाजिक चुनौतियों के बीच सेतु भी बनाना होगा।

शिक्षा को बेहतर बनाएगी मातृभाषा

❑ एम. वेंकैया नायडू

भाषा, समाज की आत्मा और मानवीय अस्तित्व को एक सूत्र में पिरोने वाला धागा है। वह चिरकाल से ही विचारों और भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। शब्द, मानवता के विश्व-दर्शन को निर्धारित करते हैं। हम शब्दों को उन विचारों से अलग नहीं कर सकते जिन्हें हम दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं। शायद इसीलिए भारत के सुविख्यात महाकवि कालिदास ने अपनी कालजयी काव्यकृति ‘रघुवंशम्’ का आरंभ ही भगवान शिव और माता पार्वती से उन्हें शब्द और उनके अर्थ समझने की शक्ति प्रदान करने के निवेदन से जुड़ी स्तुति के साथ किया है-

‘वागर्थाविव संप्रक्तौ, वागर्थप्रतिपत्तये’।
जगतः पितरौ वंदे, पार्वतीपरमेश्वरौ’।।

यहाँ कवि ने वाक् और अर्थ का संदर्भ अटूट रिश्ते के रूप में दिया है। भारतीय संस्कृति में वाक् परंपरा वाग्देवी सरस्वती के प्रतीक के रूप में सदियों से विद्यमान है। देवी ललिता के हजारों नामों में से उनका एक नाम ‘भाषा रूपा’ भी है। स्पष्ट है कि हमारे समाज का निर्माण इसी मान्यता के आधार पर ही हुआ है कि भाषा हमारी संस्कृति की प्राणवायु है, जो सभ्यता को आकार देती है। किसी संस्कृति की संपन्नता का अहसास उसके शब्दकोश, व्याकरण और एक-दूसरे से गुथे हुए शब्दों से होता है जो न केवल सूचनाओं का संप्रेषण करते हैं, बल्कि मानवीय विचारों और भावों के समूचे संसार को भी व्यक्त करते हैं। समय के साथ भाषाएँ और समृद्ध होती जाती हैं और शब्दकोश में और शब्द जुड़ते जाते हैं। जब वक्ताओं को नए अनुभवों के बारे में बताना पड़ता है तो यह बेहद जरूरी हो जाता है।

जीवन के साथ बँधी भाषा की डोर उतनी ही दिलचस्प है जितना रोचक खुद मानवता का इतिहास है। चूंकि हम अपने दैनिक जीवन में वस्तुओं, स्थानों, व्यक्तियों, भावों और घटनाओं को परिणति एवं श्रेणीबद्ध करने की जुगत में रहते हैं तो इस दौरान भाषा हमारी जीवन यात्रा को प्रतिबिंबित करती है। यह हमें हमारे इर्द-गिर्द घट रही घटनाओं से रूबरू कराने और दूसरों को उससे परिचित कराने में मददगार होती है। नए अनुभव

नए भाव उत्पन्न करते हैं। जैसे ही हमारा विश्व दर्शन परिवर्तित होता है तो भाषा उन परिवर्तनों से एकाकार कराने का प्रयास करती है। आखिर एक दशक पहले तक किसने कल्पना की होगी कि हमारा सामना 'स्टार्टअप' 'उद्यमिता' 'इंटरनेट सर्फिंग' या ट्विटर जैसे शब्दों से भी होगा? दरअसल भाषा हमारे आसपास के जीवन की वास्तविकताओं और सांस्कृतिक परिवेश को प्रतिध्वनित करती है। यही वजह है कि कुछ विशेष भाषाओं में कुछ खास शब्द इतने अनोखे होते हैं कि किसी अन्य भाषा में उनका अनुवाद करना लगभग असंभव होता है। इसमें संस्कृत भाषा के 'धर्म' जैसे शब्द का ही उदाहरण लें जिसके व्यापक अर्थ और गहराई की किसी अन्य भाषा में थाह लेना बेहद मुश्किल है। इस प्रकार भाषा किसी व्यक्ति की सामूहिक चेतना और संस्कृति की द्योतक है। आधुनिक भारतीय भाषाओं की यात्रा बड़ी समृद्ध रही है। एक अध्ययन के अनुसार भारत में करीब 780 भाषाओं का अस्तित्व है और 839 भाषाओं वाले पापुआ न्यू गिनी के बाद यह दुनिया में सबसे अधिक भाषाओं के वजूद वाला देश है। हमारी एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है जहाँ कवियों, उपन्यासकारों, संगीतकारों और कला की विभिन्न विधाओं के महारथियों ने चतुराई और कुशलता से सभी भाषाओं का उदार हृदय से उपयोग किया। हमने अन्य भाषाओं से भी शब्द आत्मसात कर अपनी भाषाओं को और समृद्ध बनाया है। हमें सभी भाषाओं को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर प्रयास करने चाहिए और नई रचनाओं को बढ़ावा देने के लिए विख्यात् साहित्यिक हस्तियों को भी इससे जोड़ना चाहिए।

हालांकि इस परिप्रेक्ष्य में देश का मौजूदा परिदृश्य कुछ चिंतित करने वाला है। इसके लिए पर्याप्त प्रयास नहीं किए जा रहे कि बच्चे स्कूली शिक्षा के दौरान किसी एक विषय में पूरी तरह पारंगत हो जाएँ। हालिया सर्वेक्षण दर्शाते हैं कि बच्चे शिक्षा तो हासिल कर रहे हैं, लेकिन उनकी शैक्षणिक क्षमताएँ बेहद कमजोर हैं। इससे उच्च अध्ययन के लिए बुनियाद कमजोर हो जाती है। हमें इस स्थिति का निदान तलाशना ही चाहिए। तमाम बच्चे विशेषकर आदिवासी इलाकों के छात्र स्कूल जाने से कन्नी काट रहे हैं, क्योंकि उन्हें उस भाषा में नहीं पढ़ाया जा रहा जो भाषा वे अपने घर पर बोलते हैं। इस तरह हम देखते हैं कि भाषा अवरोध भी हो सकती है। हम ऐसी व्यावहारिक नीति अपना सकते हैं जहाँ स्कूल के शुरुआती स्तर पर मातृभाषा पढ़ाई जाए और बाद में दूसरी भाषाओं को अपनाया जाए। लचर बुनियादी शैक्षणिक कौशल के दम पर ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का निर्माण बड़ी चुनौती होगी। हमें विश्वविद्यालयों को ऐसे पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा जिनमें शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शैक्षणिक एवं भाषाई कौशल को निखारने पर विशेष ध्यान दिया जाए।

अध्ययन दर्शाते हैं कि अगर बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाए तो सबसे बेहतर नतीजे हासिल होते हैं। जापान, स्वीडन, चीन और फ्रांस जैसे तमाम देशों में न केवल स्कूली, बल्कि उच्च शिक्षा भी मातृभाषा में मिलती है। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर इस साल 21 फरवरी को दिए अपने संदेश में यूनेस्को के महानिदेशक ने अध्ययन के माध्यम के रूप में मातृभाषा के महत्त्व को स्पष्ट रूप से इन शब्दों में रेखांकित किया था, 'अध्ययन, आत्मसम्मान और स्वाभिमान का स्तर सुधारने में मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना बेहद आवश्यक है जो विकास के सबसे प्रमुख पहलुओं में शुमार है।' आज दुनिया एक छोटे गाँव में सिमट गई है और तमाम भाषाओं की प्रासंगिकता बनी रहेगी। ऐसे में विचारों के आदान-प्रदान में अध्ययन की विधा के रूप में भाषा, साहित्य और अनुवाद के साथ सांस्कृतिक अध्ययन अपरिहार्य हो गए हैं। हमें ऐसे अच्छे शोध कार्यों की दरकार है जिनका लक्ष्य उत्कृष्ट समालोचना, ऐतिहासिक, सैद्धांतिक और सृजनात्मक विद्वता की हमारी परंपरा को सशक्त बनाने के साथ ही उसे और सक्षम बनाना हो। हमें भाषा और साहित्य में अनुप्रयुक्त शोध पद्धतियों और आधारभूत अवधारणाओं की सोच भी विकसित करनी होगी। शोध और भाषाई अध्ययन एवं अध्यापन के साथ जुड़ी सामाजिक चुनौतियों के बीच सेतु भी बनाना होगा।

डॉ. अंबेडकर का दृढ़ विश्वास था कि हम बेहतर शिक्षा के दम पर अपने देश की तकदीर बदल सकते हैं। हर कोई उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ने की स्थिति में नहीं है। वर्तमान में विश्वविद्यालय लचीली व्यवस्था के माध्यम से अधिक से अधिक छात्रों के लिए उच्च शिक्षा के द्वार खोल रहे हैं। महिलाओं या कामकाजी लोगों के लिए अलग से सत्र संचालित किए जाते हैं। उनके पाठ्यक्रमों को भी व्यक्ति की जरूरत के मुताबिक प्रासंगिक बनाने के साथ ही उनके तौर-तरीकों को भी रुचिकर एवं सहभागिता और संवाद आधारित बनाना होगा। इसमें पाठ्यक्रम की गुणवत्ता और प्रासंगिकता सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होगी। इस शिक्षा अभियान को संभव बनाने के लिए विश्वविद्यालय तकनीक का भी हर संभव उपयोग कर रहे हैं। विश्वविद्यालयों को निरंतर नवीनता-नवाचार की दिशा में काम करते रहना चाहिए और इस बात के उपाय तलाशने चाहिए कि अपने राज्य के और उससे इतर छात्रों को उनकी पसंदीदा भाषा में कैसे पढ़ा सकें। ❑

(उपराष्ट्रपति-भारत)

साभार - दैनिक जागरण

नूतन भारत : कौशल विकास

❑ डॉ. हरनाम सिंह

भारत दुनिया में तेज दिमाग और उच्च कौशल के कारण प्रसिद्ध है। कौशल विकास का उद्देश्य सभी को स्वयं और अपने परिवारों के लिए बेहतर भविष्य और इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए अवसर प्रदान करना है। जनसांख्यिकीय, आर्थिक और सामाजिक कारकों का संयोजन कौशल विकास की नीति की प्राथमिकता है। विविध चुनौतियों से निपटने के लिए कौशल प्रशिक्षण पारिस्थितिकी तंत्र से सुसज्जित किया जा रहा है। कौशल विकास और रोजगार सृजन के लिए बहुआयामी पहलुओं के साथ ही गरीबी उन्मूलन और रोजगार सृजन के अवसरों में समानता की चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। स्किल इंडिया अभियान आरंभ होने के साथ ही इस दृष्टिकोण के व्यापक तथा अधिक प्रभावी होने की संभावना है।

वैश्विक परिदृश्य में उभरती अर्थव्यवस्थाओं की चुनौती से निपटने में वे देश आगे हैं जिन्होंने कौशल विकास का उच्च स्तर प्राप्त किया है। आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए कौशल प्रशिक्षण और रोजगार सृजन प्रेरक होते हैं। रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए नए-नए उद्योग-धंधे चाहिए, और उनमें काम करने के इच्छुक युवाओं में काम कर सकने की कुशलता चाहिए। भविष्य के बाजारों के लिए कौशल विकास से लेकर मानव संसाधन विकसित करने के लिए घोषित प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से भारतीय अर्थव्यवस्था आशान्वित है नए भारत की संकल्पना को पूरा करने के लिए सरकार का लक्ष्य 2022 तक 15 करोड़ भारतीय युवाओं को काम का हुनर, कुशलता, दक्षता या स्किल सिखाना है। परन्तु सभी नौकरी माँगेंगे, तो नौकरी देगा कौन? निश्चित रूप से कुछ लोगों को तो आगे आना ही होगा कि हम बायो-डाटा देंगे नहीं, बल्कि लेंगे यानी उनको उद्यमी बनना पड़ेगा। भारत को कौशल का वैश्विक केन्द्र बनाने और रोजगार की समस्या के समाधान के लिए ही कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय स्थापित किया गया है। विकास कार्यक्रम के लिए युवा ही सुयोग्य होते है जिसके लिए भारत की स्थिति सर्वाधिक अच्छी है। भारतीय अर्थव्यवस्था को उत्पादक आयु समूह का लाभ तभी मिलेगा जब युवा कौशल में निपुण हो और उनकी कुशलता का समुचित उपयोग हो। रोजगार के लिए उपयुक्त कौशल प्राप्त युवा परिवर्तन के प्रतिनिधि हो सकते हैं जो न केवल अपने जीवन को प्रभावित करने के काबिल होंगे बल्कि दूसरों के जीवन में भी बदलाव के वाहक बनेंगे। भारत युवा देश है, और युवा देश होने का एक पहलू यह भी है कि यहाँ युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना एक चिंता का विषय है। रोजगार के नए अवसरों का सृजन करने की क्षमता तेजी से बढ़ाकर ही इस चिंता को दूर किया जा सकता है ।

भारत दुनिया में तेज दिमाग और उच्च कौशल के कारण प्रसिद्ध है। कौशल विकास का उद्देश्य सभी को स्वयं और अपने परिवारों के लिए बेहतर भविष्य और इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए अवसर प्रदान करना है। जनसांख्यिकीय, आर्थिक और सामाजिक कारकों का संयोजन कौशल विकास की नीति की प्राथमिकता है। विविध चुनौतियों से निपटने के लिए कौशल प्रशिक्षण पारिस्थितिकी तंत्र से सुसज्जित किया जा रहा है। कौशल विकास और रोजगार सृजन के लिए बहुआयामी पहलुओं के साथ ही गरीबी उन्मूलन और रोजगार सृजन के अवसरों में समानता की चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। स्किल इंडिया अभियान आरंभ होने के साथ ही इस दृष्टिकोण

के व्यापक तथा अधिक प्रभावी होने की संभावना है। उद्योग की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण क्षमता का सृजन करना एवं सशक्त तथा कुशल कार्यबल के कार्य को पूरा सम्मान देते हुए उसके लिए पर्याप्त रोजगार सुनिश्चित करना अगली चुनौती है। देश को आगे बढ़ना है, तो कौशल विकास ही एकमात्र माध्यम है। कौशल विकास के द्वारा काबिलियत बढ़ाने एवं रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, ताकि बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार दिया जा सके। चीन की पहचान दुनिया की मैन्यूफैक्चरिंग फैक्ट्री की बन गई है, तो भारत की पहचान दुनिया के ह्यूमन रिसोर्स उपलब्ध कराने की हो सकती है। कॉरपोरेट जगत और पीएसयू अगर मंत्रालय की पहल से जुड़ जाएं, तो यह एक ऐसे संस्थान का स्वरूप धारण कर लेगा, जिससे लोगों को हुनरमंद बनाने और भारत को विश्व की स्किल कैपिटल बनाने में आसानी होगी। वर्तमान सरकार जिस तरह से कौशल विकास पर जोर दे रही है इसके दूरगामी परिणाम आएंगे और भारत विश्व में प्रशिक्षित मानव संसाधन का अगुआ राष्ट्र होगा।

गरीबी से लड़ने का प्रमुख हथियार कौशल विकास प्रशिक्षण है इसी के जरिए गरीबी खत्म की जा सकती है। पर्याप्त शिक्षा और कौशल विकास के अभाव में युवाओं को रोजगार के लिए भटकना पड़ता है। कौशल विकास और रोजगार सृजन के माध्यम से बेरोजगारी और गरीबी दूर करने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। कौशल विकास प्रशिक्षण का स्तर बेहतर बनाने और बेरोजगारी तथा गरीबी जैसी समस्याओं को जड़ से मिटाने के लिए सरकार ने कदम बढ़ाये हैं। बहुआयामी रणनीति अपनाकर ही कौशल विकास और रोजगार सृजन किया जा सकता है। रणनीति गरीबी कम करने और रोजगार के अवसर पैदा करने, विशेष तौर पर कमजोर तबके के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यक सेवाओं में सुधार लाने, शिक्षा में कौशल विकास और नए रोजगार के अवसर पैदा करने की जरूरत है। तकनीकी रूप से शिक्षित व्यक्ति की माँग भारत ही नहीं अपितु विश्व के अन्य देशों में भी है। प्रशिक्षण प्राप्त युवाओं को अपनी दक्षता और प्रतिभा पर विश्वास करते हुए समर्पण भाव से उद्यम करने का संकल्प लेना होगा। जीवन के हर मोड़ पर चुनौती का सामना करना पड़ता है ऐसी स्थिति में प्रमाण पत्र प्राप्त कर बैठ जाना जीवन में ठहराव ला देता हैं और ठहराव से दक्षता कुंद हो जाती है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रशिक्षण प्राप्त युवा अपनी दक्षता में उत्तरोत्तर सुधार करते रहें। प्रतिभावान, उच्च कौशल वाले और नवीन विचारों से पूर्ण भारतीय युवा के अभिनव विचारों का समुचित उपयोग कर ही भारत रोजगार सृजन की संभावनाओं का दोहन कर सकता है।

कौशल विकास परिदृश्य

रोजगार के नए और उत्पादक अवसरों में रोजगार मुहैया कराने की क्षमता योजना आयोग के आँकड़ों के अनुसार, 2004-05 से 2009-10 तक, पाँच वर्षों में भारत में रोजगार के मात्र 27 लाख नए अवसर पैदा हुए हैं, जबकि आवश्यकता लगभग 6 करोड़ अवसरों की थी। जबकि 2009-10 में 1 करोड़ 57 लाख लोग कृषि क्षेत्र से बेरोजगार हुए, और लगभग 72 लाख लोग विनिर्माण क्षेत्र से। इसका सीधा सा अर्थ यह है कि हमें रोजगार के नए अवसरों का सृजन कर सकने की अपनी क्षमता तेजी से बढ़ानी होगी। कई युवा शिक्षित भी हैं लेकिन उन्होंने जो कुछ पढ़ा-लिखा-सीखा है, उसमें से रोजगार दिलाने लायक कम ही है। और जो रोजगार में हैं, उन्हें अपनी औपचारिक शिक्षा से कोई लाभ बहुत कम ही होता है। वास्तव में रोजगारशुदा लोगों में से सिर्फ 2.3 प्रतिशत ऐसे हैं, जिन्हें अपने काम की दक्षता किसी शैक्षणिक कार्यक्रम से औपचारिक तौर पर मिली हो। बाकी सब चलते काम में हाथ बँटाने की स्थिति में हैं। इसके विपरीत, दुनिया के विकसित देशों में 75 प्रतिशत से लेकर 96 प्रतिशत तक लोग अपने कार्य के बारे में औपचारिक तौर पर दक्ष हैं। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष के अनुसार भारत में लगभग 36 करोड़ लोग 10 से 24 वर्ष की बीच की आयु के हैं, जो अमेरिका की कुल जनसंख्या से भी ज्यादा है। 2020 तक भारत की जनसंख्या की औसत आयु 29 वर्ष होगी, जबकि औद्योगिक देशों में यही आयु 40 से 50 वर्ष के बीच होगी। बाजार में नौकरियाँ हैं लेकिन आवश्यकता से कम हैं। असंगठित क्षेत्र में आमदनी भी कम है और उत्पादकता भी कम है। कोई अनहोनी हो जाए, तो वह नौकरी कोई दिलासा देने की स्थिति में भी नहीं होती। प्रश्न सिर्फ युवाओं को किसी कार्य की दक्षता देने का नहीं है, बल्कि उन्हें ऐसा रोजगार दिलाने का है, जो वास्तव में आय का सृजन करता हो। रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए एक ओर तो नए-नए उद्योग-धंधे चाहिए, और दूसरी ओर उनमें काम करने के इच्छुक युवाओं में काम कर सकने की दक्षता चाहिए। आशा है कि मेक इन इंडिया का विश्व व्यापी अभियान भारत में नए उद्योग-धंधों की आवश्यकता को एक हद तक पूरा करने में सफल रहेगा। स्मार्ट सिटीज का अभियान विशेषकर इन नए उद्योगों और उनमें काम करने वालों की रिहाइश और उनके शहरीकरण की आवश्यकताएँ पूरी करेगा। प्रधानमंत्री ने इससे भी बड़ा लक्ष्य देश के सामने रखकर आह्वान किया है कि भारत कौशल का वैश्विक केन्द्र बने। वह भारत को मैन्युफैक्चरिंग यानी विनिर्माण का वैश्विक केन्द्र बनाने का इरादा पहले ही जता चुके हैं।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) युवाओं के कौशल प्रशिक्षण के द्वारा सुनिश्चित रोजगार के उद्देश्य से कार्यरत है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत पाठ्यक्रमों में सुधार, बेहतर प्रशिक्षण और प्रशिक्षित प्रशिक्षकों पर जोर देकर व्यवहार कुशलता को निखारना है। कौशल विकास और उद्यम

मंत्रालय, राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (एनएसडीसी) के माध्ययम से इस कार्यक्रम को क्रियान्वित कर रहा है। कौशल विकास के लक्ष्य निर्धारित करते समय ही मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन और स्वच्छ भारत अभियान की माँगों के अनुरूप कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से युवाओं को तैयार किया जा रहा है जो बदलते परिवेश में अपनी भूमिका निभा सकें। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत मुख्य रूप से श्रम बाजार में पहली बार प्रवेश कर रहे युवाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। योजना के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी एनएसडीसी के प्रशिक्षण साझेदारों द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान में 4,526 केंद्रों के एनएसडीसी के 290 प्रशिक्षण साझेदार हैं। केंद्र व राज्य सरकारों से संबंधित प्रशिक्षण प्रदाता संस्थानओं को भी इस योजना के तहत प्रशिक्षण के लिए जोड़ा गया है। जिनकी क्षमता प्रतिवर्ष एक करोड़ अस्सी लाख युवाओं को प्रशिक्षित करने की है। पीएमकेवीवाई के तहत 40 सेक्टर कौशल परिषद व राज्य सरकारें भी कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों की निगरानी कर रही हैं। रोजगारपरक कौशल विकास का यह महा अभियान–प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना– एक साथ 101 शहरों में शुरू की गई है। सरकार के अभियान 'स्किल इंडिया' को लेकर बजट में कई प्रावधान किए हैं। राष्ट्रीय कॅरियर सेवा के तहत 2016–17 के अंत तक 100 मॉडल कॅरियर केंद्र शुरू किए जाएंगे। कौशल विकास के लिए 1804 करोड़ का आवंटन बजट में किया गया है। वहीं 1500 मल्टी स्किल ट्रेनिंग सेंटर्स की स्थापना हो रही है।

राष्ट्रीय कौशल व उद्यम विकास नीति के तहत उच्च गुणवत्ता वाले कार्यबल के साथ सतत् विकास को बढ़ावा देने की रूपरेखा तैयार कर वर्ष 2022 तक 50 करोड़ लोगों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा गया है। कौशल विकास और ग्रामीण क्षेत्रों में लंबे समय तक आजीविका का सृजन कैसे हो ? कौशल विकास सामान्य जन से कैसे जोड़ा जाए? आमदनी के लिए कौन–कौन से बदलाव हैं जरूरी ? कहाँ मिलेगा बाजार, कितना होगा लाभ, खेती के लिए क्या करें किसान? महिला श्रम, बढ़ईगिरी, लोहारगिरी, कुम्हारगिरी, नाईगिरी व परंपरागत कौशल पर आधारित उद्योगों, स्वरोजगारों, अवसरों के आधार पर विकास के प्रकल्प कैसे संचालित हों? उद्यमशीलता के विकास एवं स्वरोजगार संवर्द्धन हेतु कैसे अल्पकालिक प्रशिक्षण हो? परंपरागत उद्योगों को सशक्त बनाने के क्या उपाय हो सकते हैं ? उद्यमशीलता के पाठ्यक्रमों को कैसे लागू कराया जाय ? आदि प्रश्नों के उत्तर प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, दीन दयाल उपाध्याय कौशल ग्रामीण विकास योजना, दीनदयाल उपाध्याय कौशल केंद्र के माध्यम से देने का सराहनीय प्रयास सरकार कर रही है। आवश्यकता है प्रयासों के सामूहिक समन्वय एवं पारदर्शी क्रियान्वयन की। जनसंख्या के सकारात्मक कारकों और उच्च गुणवत्ता वाले कार्यबल की सतत उपलब्धता के आधार पर ही देश विश्व अर्थव्यवस्था में मजबूत पकड़ बना पायेगा।

माँग के अनुसार कौशल विकास

कौशल विकास योजना का मुख्य उद्देश्य स्वरोजगार एवं रोजगार सृजित करना, उद्यमिता कौशल विकास तथा पेशेवर मार्गदर्शन प्रदान कर नए उद्यमियों को अपनी ईकाइयाँ स्थापित करने में सहायता प्रदान करना है। संभावनाशील निर्माण एवं सेवा क्षेत्रों में व्यावहारिक परियोजनाओं के चयन में उद्यमियों की सहायता करना, उन्हें आकर्षित करना तथा स्टार्ट–अप स्थापित करने एवं इनके व्यावसायिक संचालन के

लिए प्रशिक्षण प्रदान करना कौशल विकास का उद्देश्य है। प्रौद्योगिकी आधारित नवीन क्षेत्र, ग्रामीण अधोसंरचना एवं सुविधाएँ, शिल्प, जल एवं स्वच्छता, नवीनीकरण उर्जा, स्वास्थ्य चिकित्सा, स्वच्छ तकनीक, कृषि, बागवानी एवं संबद्ध क्षेत्र, खाद्य प्रसंस्करण, खुदरा, पर्यटन एवं आतिथ्य संस्कार, मोबाइल, सूचना प्रौद्योगिकी एवं बायो-टेक्नालॉजी कौशल विकास योजना द्वारा प्रमुख रूप से फोकस किया गया है। कौशल विकास के अंतर्गत अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रों से जुड़े 200 से अधिक कौशलों को शामिल किया जा चुका है जिसमें परंपरागत हस्तकला एवं अन्य व्यावसायिक कुशलताएँ शामिल हैं। इस प्रक्रिया द्वारा न सिर्फ भारत के परंपरागत कौशल को बचाया जा सकता है बल्कि उन्हें संशोधित एवं नवीन बनाने का अवसर भी प्राप्त होगा। वहीं दूसरी तरफ औद्योगिक जगत के विनिर्माण क्षेत्र से जुड़ी नवीन कौशल का विकास करके रोजगार एवं स्वरोजगार के नये अवसरों का सृजन किया जा सकता है। कौशल विकास कार्यक्रम की विस्तृत पहुँच द्वारा आर्थिक विकास की प्रक्रिया को वास्तव में एक जन क्रांति का रूप दिया जा सकता है।

कौशल विकास एवं रोजगार सृजन अवसर

बेरोजगारी भारत में काफी लम्बे समय से बड़ी समस्या है पर देश की विडंबना है कि पूर्ववर्ती सरकारों ने इस समस्या की ओर गंभीरता से न ही सोचा और न ही इसको दूर करने के लिए कोई दीर्घ कालिक नीति का निर्माण किया। श्रमिक व कामगार को सिर्फ सर्टिफिकेट देने के संस्थान खोले और पलट कर यह भी नहीं देखा कि उनमे आधुनिक युग के अनुसार कौशल विकसित हो रहा है कि नहीं। नीतिगत हस्तक्षेप के जरिए बेहतर रोजगार सृजन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। श्रम बल में आने वाले युवाओं को काम उपलब्ध कराने के लिए भारत में हर साल 1.20 करोड़ नए रोजगार पैदा करने की जरूरत है। बेरोजगारी के उपलब्ध आँकड़े बताते हैं कि इस मामले में हमारे प्रदर्शन में काफी अंतर बना हुआ है। उद्योगों एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों से माँग के अनुरूप युवाओं को प्रशिक्षण देने से उन्हें प्लेसमेंट मिलेगा। प्रयासों से किसी जरूरतमंद युवा को रोजगार मिल सकेगा और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आएगा। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 2014-15 के लिए हाल ही में जारी वार्षिक रिपोर्ट बताती है कि भारत की संवृद्धि का परिदृश्य लगातार सुधर रहा है और वास्तविक गतिविधियों के सूचकांक इसके सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 7.6 प्रतिशत वृद्धि के अनुमानों के अनुरूप हैं। रिपोर्ट कहती है कि कारोबारी विश्वास मजबूत बना हुआ है और चूंकि केंद्रीय बजट में घोषित पहलों से बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में निवेश बढ़ रहा है, इसलिए उनमें निजी निवेश आना चाहिए और मुद्रास्फीति में कमी के कारण उपभोक्ताओं की मनोदशा में सुधार आना चाहिए। कुछ सूचकांक हैं, जो बताते हैं कि दुनिया भर के देशों में मंदी आने के बावजूद भारत की कहानी उज्ज्वल और सही जगह पर दिख रही है। तेजी से उभर रहे राष्ट्रों में केवल भारत के जीडीपी आँकड़ों में सुधार के संकेत मिले हैं।

सरकार ने पहले ही कदम बढ़ा कर देसी और विदेशी कंपनियों को अपने उत्पाद भारत में बनाने और विदेश में बेचने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के नियमों में ढील दे दी है। मेक इन इंडिया से विभिन्न क्षेत्रों में विनिर्माण की गतिविधियाँ बढ़ने और जीडीपी में उनका योगदान बढ़ने की अपेक्षा है। यह उम्मीद भी जताई जा रही है कि विनिर्माण गतिविधियों में वृद्धि से उस कुशल कार्यबल के लिए भारी संख्या में रोजगार सृजन होगा, जिस कार्यबल को देश तैयार कर रहा है। सरकार की स्किल इंडिया मिशन मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटीज तथा अन्य राष्ट्रीय अभियानों के लिए धुरी का काम करेगी। काम के लिए तैयार और कुशल कार्यबल ही इन सभी राष्ट्रीय अभियानों को सफल बनाएगा और भारत की आर्थिक वृद्धि, जीडीपी आँकड़ों में सुधार तथा प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी का कारण बनेगी।

कौशल विकास और जनसांख्यिकीय लाभांश

भारत में औपचारिक तौर पर कुशल कार्यबल का आकार बहुत ही छोटा तकरीबन 2 प्रतिशत है जो कि बाकी विकासशील देशों के मुकाबले काफी कम है। रिपोर्ट के अनुसार 15 वर्ष या इससे अधिक आयु के 6.8 प्रतिशत लोग ही व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त हैं। औपचारिक व्यावसायिक शिक्षा के अभाव, गुणवत्ता के बढ़ते अंतर, ड्रापआउट मामलों, अपर्याप्त कौशल विकास प्रशिक्षण क्षमता व कौशल विकास को लेकर नकारात्मक धारणाओं और व्यावसायिक कोर्सों में उद्योग के लिए काम कर सकने लायक कौशल की कमी बनी हुई है। आर्थिक समीक्षा 2014-15 में कहा गया है कि भारत में गुणवत्ता रोजगार सृजन की रफ्तार में सबसे बड़ी बाधा कुल रोजगार में विनिर्माण क्षेत्र की कम हिस्सेदारी का होना है। राष्ट्रीय विनिर्माण नीति 2011 ने 2022 तक 100 मिलियन नौकरियों के सृजन का लक्ष्य रखा है। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना के तहत केन्द्र सरकार तेजी से कार्य कर रही है। उद्योग स्थापना के कुछ कार्यक्रमों का सरलीकरण कर दिया गया है पर्वतीय क्षेत्र के लिये विशेष औद्योगिक संस्थानों के निर्माण विकसित किये जाने की आवश्यकता है जिससे स्थानीय युवकों को रोजगार उपलब्ध हो सके। इसलिए यह अनिवार्य है कि देश के युवाओं को देश के जनसांख्यिकीय लाभांश के उपयोग के लिए सही दिशा मिले और उनकी निजी तथा व्यावसायिक वृद्धि भी होती रहे।

उष्मायन केन्द्र (इन्क्यूबेशन सेंटर)

सरकार इन्क्यूबेटर (उष्मायन) केन्द्रों की स्थापना के लिए आईआईटी, एनआईटी जैसे जाने-माने तकनीकी

संस्थानों, आईआईएम एवं आरएण्डडी संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों को प्रोत्साहित कर रही है। सरकार राज्य में पी.पी.पी. आधार पर इन्क्यूबेटर्ज स्थापित करने के लिए जाने-माने इन्क्यूवेटर्ज के साथ समझौता ज्ञापन करना चाहिए। राज्य में इन्क्यूबेटर्ज (उष्मायन) सुविधा की स्थापना के लिए राष्ट्रीय आरएण्डडी, प्रबन्धन तथा प्रौद्योगिकी संस्थानों से तालमेल करना चाहिए। उपयुक्त अधोसंरचना को विकसित कर ही रोजगार सृजन के संभावित अवसरों का लाभ युवाओं को प्रदान किया जा सकता है। उष्मायन केन्द्र नि:शुल्क परामर्शी सेवाएँ, अपनी प्रयोगशालाओं का उपयोग इत्यादि जैसी सुविधाएँ प्रदान कर स्टार्ट-अप एवं नवोन्मेष परियोजनाओं का सहयोग करें ।

स्टार्ट-अप प्रोत्साहन

दुनियाभर में स्टार्टअप की तीसरी बड़ी संख्या भारत में है। युवाओं को उद्यमी बनने का अवसर प्रदान करने के लिये स्टार्ट अप इंडिया की शुरुआत की गयी है। स्टार्ट-अप का अर्थ, देश के युवाओं को बैंको के माध्यम से वित्त प्रदान करना जिससे उनकी शुरुआत बेहतर मजबूती के साथ हो ताकि वो भारत में अधिक रोजगार सृजन कर सकें। 'स्टार्ट-अप' तथा 'नवीन परियोजनाओं' को बढ़ावा देने तथा युवाओं को कौशल प्रदान करने तथा संभावनाशील निवेशकों में उद्यमिता विकसित करने के उद्देश्य से नौकरी के इच्छुक शिक्षित युवाओं को रोजगार सर्जक में परिवर्तित करने के लिए स्टार्ट-अप नए उद्योग योजना आरम्भ हुई है। उद्यमियों को अपने उद्यमों में सफलता हासिल करने के उद्देश्य से योजना में स्टार्ट-अप के लिए अनेक प्रोत्साहनों पर बल दिया गया है। कौशल विकास योजना में क्षमता निर्माण, नेटवर्किंग विकसित करने, आवश्यक ढाँचा स्थापित करने तथा जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से केन्द्रों के सृजन का प्रावधान किया गया है। 'स्टार्ट अप इंडिया' कार्यक्रम देश में नवोन्मेष को बढ़ावा देने के लिए उपयुक्त वातावरण बनाना है ताकि आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा दिया जा सके और देश में बड़े-पैमाने पर रोजगार के अवसर मुहैया कराए जा सके। स्टार्टअप कारोबारियों द्वारा कमाये जाने वाले मुनाफे पर व्यवसाय शुरू होने के पहले तीन साल तक इनकम टैक्स से छूट होगी। देश के नौजवानों में व्यवसाय को लेकर जितनी दिलचस्पी रहेगी उतने ही ज्यादा रोजगार के अवसर देश में होंगे जिससे बेरोजगारी की समस्या का अंत होगा।

कौशल भारत-कुशल भारत अभियान देश को एक विनिर्माण केन्द्र के रूप में परिवर्तित करने की पहल है। विकासशील अर्थव्यवस्था के विनिर्माण क्षेत्र समेत सभी क्षेत्रों की माँग के अनुसार प्रशिक्षित कार्यबल तैयार करने में इस कौशल विकास मंत्रालय की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है। गरीबी उन्मूलन के लिए आर्थिक वृद्धि और व्यापक आर्थिक स्थिरता जरूरी है जो कौशल विकास से ही संभव है। कौशल विकास द्वारा काबलियत बढ़ाने एवं रोजगार सृजन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, ताकि बड़ी संख्या में युवाओं को रोजगार दिया जा सके। चीन की पहचान दुनिया की मैन्यूफैक्चरिंग फैक्ट्री की बन गई है, तो हमारी पहचान दुनिया के ह्यूमन रिसोर्स उपलब्ध कराने की हो सकती है। कॉरपोरेट जगत और पीएसयू अगर मंत्रालय की पहल से जुड़ जाएँ, तो यह एक ऐसे संस्थान का स्वरूप धारण कर लेगा, जिससे लोगों को हुनरमंद बनाने और भारत को विश्व की स्किल कैपिटल बनाने में आसानी होगी। कौशल प्रशिक्षण और रोजगार के समान अवसर उपलब्ध करवाकर विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के अलावा कौशल विकास पर ज्यादा जोर देने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को कौशल विकास के साथ अपने अंदर छुपी कोर कॉम्पेटेन्सि को निखारने की आवश्यकता है। कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के अंदर शिक्षा के नए आयाम स्थापित कर विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी स्थापित कर कुशल भारत का निर्माण किया जा सकता है। कोई संदेह नहीं कि हम एक अनूठे रास्ते पर बढ़ चले हैं। लेकिन वास्तविक कौशल अड़चनों को दूर करके आगे निकलने में है। भारत को अपना यह कौशल सिद्ध करके दिखाना है। कौशल विकास नीति के तहत मिशन के तौर पर लागू की गई कौशल विकास योजना मानव संसाधन और उद्योग के विकास में एक नए युग की शुरुआत करेगी। कौशल-सूची एवं कौशल योजनाओं पर सूचना समयबद्ध आधार पर उपलब्ध कराने के लिए एक सांस्थानिक व्यवस्था स्थापित किए जाने की आवश्यकता है। जन सामान्य की सक्रिय भागीदारी स्थापित करने से दूरगामी परिणाम आएँगे और भारत विश्व में प्रशिक्षित मानव संसाधन का अगुआ राष्ट्र होकर नए भारत कि संकल्पना साकार करेगा। ❑

(सहायक आचार्य, दीनदयाल उपाध्याय कौशल केन्द्र, सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर (उधम सिंह नगर) उत्तराखण्ड)

वेदों में राष्ट्रीयता एवं वैश्विक दृष्टि

❑ डॉ. धर्मवीर वशिष्ठ

वैदिक काल से भारत में सांस्कृतिक परम्परा का जो दिव्य स्वरूप वैदिक सनातन धर्म से प्रस्फुटित हुआ उसी की प्रेरणा से धर्म के विविध स्वरूपों एवं सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव इतिहास ने स्पष्ट दिखाई देता है। प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक के भारतीय इतिहास का शाश्वत सत्य यही है कि इसके सांस्कृतिक वैभव ने सम्पूर्ण विश्व को आत्मसात किया है। वेद एवं उपनिषद् सम्पूर्ण विश्व की विरासत है, जो ब्रह्मा एवं प्रकृति की व्याख्या करते हैं। 21वीं सदी में पश्चात्य जगत् वैश्वीकरण की कल्पना कर रहा है जबकि वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति के प्रणेताओं ने सम्पूर्ण विश्व के कल्याण हेतु यज्ञ द्वारा आहूतियाँ देते हुए भारतीय वैश्वीकरण द्वार प्रत्येक प्राणी जगत् एवं सृष्टि के कल्याण की कल्पना की है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति की अविरल शाश्वत धारा भारत के सांस्कृतिक इतिहास को सदैव गौरवान्वित करती रही है। वैदिक काल से भारत में सांस्कृतिक परम्परा का जो दिव्य स्वरूप वैदिक सनातन धर्म से प्रस्फुटित हुआ उसी की प्रेरणा से धर्म के विविध स्वरूपों एवं सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव इतिहास ने स्पष्ट दिखाई देता है।

प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक के भारतीय इतिहास का शाश्वत सत्य यही है कि इसके सांस्कृतिक वैभव ने सम्पूर्ण विश्व को आत्मसात किया है। वेद एवं उपनिषद् सम्पूर्ण विश्व की विरासत है, जो ब्रह्मा एवं प्रकृति की व्याख्या करते हैं। 21वीं सदी में पश्चात्य जगत् वैश्वीकरण की कल्पना कर रहा है जबकि वैदिक काल से ही भारतीय संस्कृति के प्रणेताओं ने सम्पूर्ण विश्व के कल्याण हेतु यज्ञ द्वारा आहूतियाँ देते हुए भारतीय वैश्वीकरण द्वार प्रत्येक प्राणी जगत् एवं सृष्टि के कल्याण की कल्पना की है।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या।
पर्जन्यः स उ नः पिर्पतु।

(अथर्ववेद 12/1/12)

(भूमि) भूमि! तुम हमारी (माता) माता हो (अहम्) हम उस (पृथिव्याः पुत्र) पृथिवी के पुत्र हैं। (पर्जन्य पिता) जल की वृष्टि से पोषण करने वाला परम पिता पालन करने वाले हैं (सउन) वह हमें निश्चय (पिर्पतु) पालन करे।

सम्पूर्ण पृथ्वी को माता एवं पर्जन्य को परम पिता के रूप में स्तुति करते हुए वैदिक संस्कृति हजारों वर्षो से ज्ञान का संचरण करती रही है। वैदिक ऋचाओं में विश्व बन्धुत्व की कामना करते हुए राष्ट्र का धारण पोषण करने हेतु परमेश्वर से प्रार्थना की है। वेदों में अनेक सूक्तों में मातृभूमि की स्तुति राष्ट्रदेवी की स्तुति एवं मातृभूमि के व्यक्तित्व राष्ट्र गीत द्वारा राष्ट्रीयता एवं दृष्टिकोण की प्रेरणा देते हैं।

ये देवा राष्ट्र भूताऽभितोयन्ति सूर्यम्।
तैष्टे रोहितः संविदानों राष्ट्र दधातु सुमनस्यमानः।।

(अथर्ववेद 12/2/35)

(ये राष्ट्रभ्रातः देवाः) जो राष्ट्र का भरण पोषण करने वाले देव (सूर्य अमितः यन्ति)

सूर्यदेव के चारों ओर घूमते हैं (तै संविदानः सुमनस्यमानः रोहितः) उनके साथ रहने वाले उत्तम संकल्प वाला रोहित अर्थात् सूर्य (ते राष्ट्र दधातु) तेरे राष्ट्र का धारण पोषण करे।

पृथ्वी को मातृभूमि माँ मानने वाले सभी मनुष्य श्रेष्ठ हैं और वे मिल कर प्रयत्न करें इसका उल्लेख ऋग्वेद के सूक्त से स्पष्ट होता है-

ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उदि
मदोऽमध्यमासोमहसावि वाव्धुः।
सुजातासो जनुषा पृश्निमातरो दिवोमर्त्या
आ नो अच्छा जिगातनः।। (ऋग्वेद 5/51/6)
अज्येष्ठासोऽकनिष्ठास एते
संभ्रातरो वावृधु सोभगाय। (5/60/5)

सम्पूर्ण (पृश्निमातरः) मातृभूमि को माता मानने वाले सब (मर्त्याः) मनुष्य सच्चे कुलीन हैं। उनमें न कोई ज्येष्ठ श्रेष्ठ है न कोई कनिष्ठ है और न कोई मध्यम है वे सब समान हैं वे सब (उत्-भिदः) अपने ऊपर के दबाव को भेदकर ऊपर उठने वाले हैं। वे (भ्रातरः) बन्धु ही हैं वे अपने (सौभाग्य) सौभाग्य के लिए (सं-वावृधु) संग मिलकर प्रयत्न करते हैं।

सम्पूर्ण राष्ट्र के कल्याण हेतु मातृभूमि माँ भारती, मातृभाषा माँ इडा और मातृ सभ्यता माँ सरस्वती को मानते हुए कल्याण हेतु यज्ञ के द्वारा बल चेतना एवं उत्तम कर्म से आसन पर बैठने का आह्वान किया है-

आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विडा
मनुष्वदिह चुतसन्ती
तिष्रो देर्वीबर्हिरंद स्योनं सरस्वतीः
स्वपः सन्दताम्।। (अथर्ववेद 5/12/7)

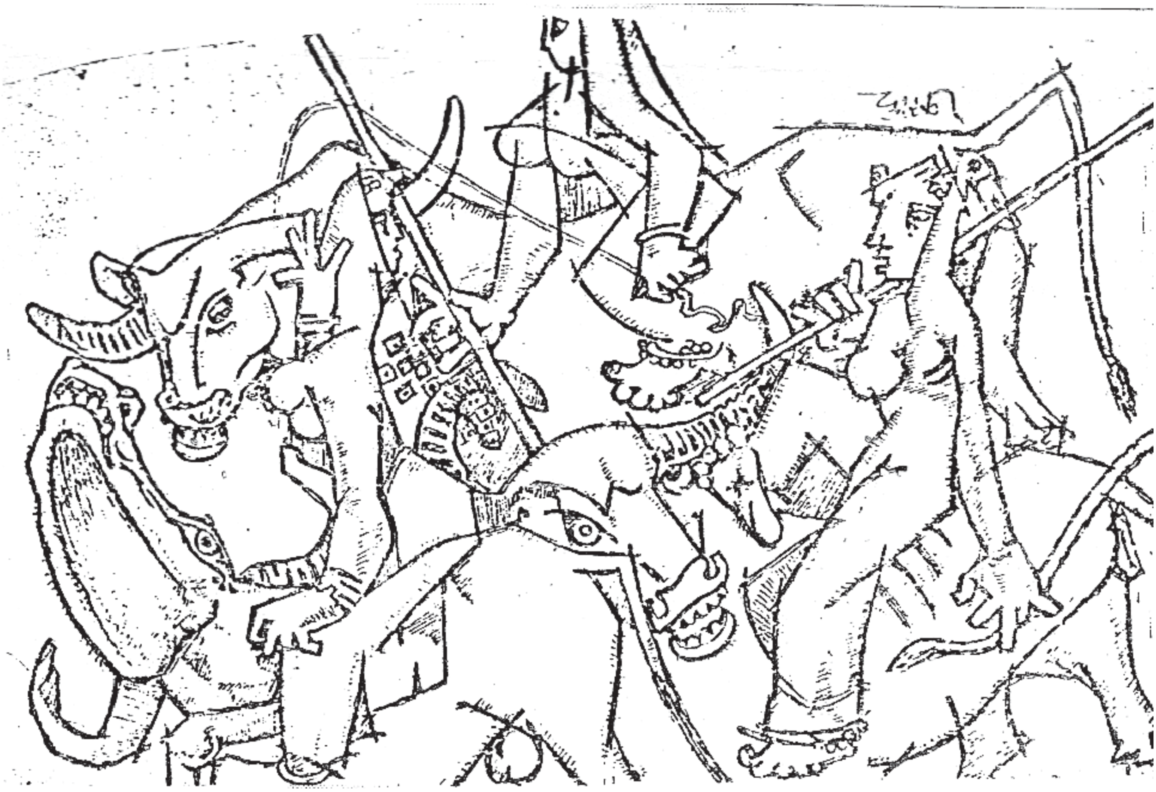

(भारती नः यज्ञं तूयं आएतु) सबका भरण करने वाली मातृभूमि हमारे यज्ञ में बल के साथ आवे। (इडा मनुष्वत्यज्ञ चेतन्सी इह)भातुभाषा मनुष्यों से युक्त यज्ञ की चेतना देती हुई यहाँ आवे। (सरस्वती सुअपपसः आ सदन्तां) मातृसभ्यता उत्तम कर्म करने वाले के पास बैठे और ये (तिस्त्र देवी इदस्योनं बर्हिः) तीनों देवियाँ इस उत्तम आसन पर आकर बिराजे।

राष्ट्रदेवी के स्वरूप को प्रकाशक शक्ति के रूप में वस्तुओं को प्राप्त कराने वाली ज्ञान देने वाली एवं 'यज्ञियाना प्रथना' सब पूजनीयों में प्रथम पूजनीय बतलाया है–

(अहं राष्ट्री) मैं प्रकाशक शक्ति (वसूना संगमनी) वसुओं को प्राप्त कराने वाली और (चिकितुषी) ज्ञान देने वाली हूँ इसलिए (यज्ञियानां प्रथमां)सब पूजनीयों में पहली पूजने योग्य हूँ। (ता भूरिस्थना मा) उस विविध प्रकार में स्थित मुझको मुरिआवेशयन्तः देवा बहुत प्रकार से प्राप्त होने वाले देव (व्यदधुः) विशेष प्रकार से धारण करते हैं।

आयातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः
सर्वशबन्धुधिवी मुस्त्रियामि।
अथास्ममय वरूणो वायुरग्नि
वृहद्राष्ट्रं संवेश्वं दधातु।।

(अथर्ववेद 3/8/1)

(अस्त्रियामि पृथिवी सर्वशयन) किरणो से पृथ्वी को संयुक्त करता हुआ (ऋतुभि कल्पना मित्र) ऋतुओं के साथ समर्थ होता हुआ (मित्र) मित्र सूर्य (आयातु) आये (अथ) और (वरुण वायु, अग्नि) वरुण, वायु व अग्नि (अस्मभ्यं संवेश्यं वृहत् राष्ट्र)हम सबके लिए उत्तम प्रकार रहने योग्य बड़े राष्ट्र को (दधातु) धरण करें।

मातृभूमि का वैदिक राष्ट्रगीत राष्ट्र पुष्टि की दृष्टि से जिसमें राष्ट्रीयता के गुण स्पष्ट किये जाते हैं।

सत्यंबृहदुत मुग्रं दीक्षा
तपोब्रह्म यज्ञः पृथिवी धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नयुरं
लोकं पृथिवी न कृणातु।।

(अथर्ववेद 12/1/1)

सत्यव्रत, सरलता, उग्रता, दक्षता, तप अर्थात् धर्मानुष्ठान ज्ञान, यज्ञ अर्थात् आत्म समर्पण ये सात गुण (पृथिवीम्) भूमि देश या राष्ट्र का (धारयन्ति) पालन पोषण और रक्षण करते हैं (सा पृथिवी) वह मातृभूमि (भूतस्य) प्राचीन और (भव्यस्य) भविष्य तथा वर्तमान समय के सब पदार्थों की (पती) पालन करने वाली, ऐसी वह हमारी मातृभूमि (न) हमको (उरू) विस्तृत (लोक) स्थान या कार्यक्षेत्र (कृणोतु) उत्पन्न करे।❑

(44-सु., घाटी महालक्ष्मी मंदिर के पास, उदयपुर)

Teaching has been considered to be the most noble profession ever since. Therefore, it commands highest respect in the society. But, unfortunately, most of our teachers have forgotten the value of social respect. It has become the most unguarded profession at present. There is a myth of being a good teacher in modern day education system. Teaching is not considered as a job but a passion and therefore good teachers devote more time in teaching related activities and realize more satisfaction. Such teachers command more respect from the students and society.

Myth of Being a Good Teacher

❑ **Prof. D. P. Tiwari**

Teaching has been considered to be the most noble profes sion ever since. Therefore, it commands highest respect in the society. But, unfortunately, most of our teachers have forgotten the value of social respect. It has become the most unguarded profession at present. There is a myth of being a good teacher in modern day education system due to lack of following attributes:

Openness and cordiality- The most important characteristic of a good teacher is openness and cordiality. It is a necessary that the students should be comfortable to share their problems with the teacher without being afraid or hesitant. Large numbers of students feel shy to go to the teachers to discuss their academic and personal problems. Today, the concept of maintaining distance with the students has wrongly been construed resulting into uncordial relationship between the teacher and the student. In words of Prof Krishna Kumar, ex-director of NCERT, we see a proliferation of "textbook culture" where textbooks have become drivers of information. Therefore, the once revered position of "guru" has eroded to the one of "headmaster". Consequently, students show indifferent behavior towards the society as a result of their learning and the kind of experience they gather during the period of their studies.

Personality- Students always get fascinated with the teachers having good personality. Such teachers are confident enough in their teaching, leading to better communication, understanding, and ultimately it crops good results. Dressing sense and presentable form of a teacher plays a vital role in shaping the students into good and confident citizens.

Having up to date knowledge of subject matter- The prime dimension in teaching is to have intellectual excitement to deliver the topics. Teaching and learning is a continuous and symbiotic process and therefore it adds many new things to learning on day to day basis. Good teachers have up to date knowledge of the subject matter. Only teachers who continuously update themselves through critical evaluation and feedback are successful in the long run.

Communication and a sense of humor- It is the communication and the sense of humor which enable the students to grasp the subject matter effectively. Young generation evidently seeks to have fun and humor in the class. Sense of humor helps break the ice between students and the teacher and makes subject matter more interesting. The good teachers know the art of teaching. Also, the students can listen to such teachers for long time without getting bored.

A patient listener- Teaching doesn't have to be a monologue from the teacher to students. Rather, every student in the class should be motivated to actively participate, say something and should be listened patiently by the teachers. It is rightly said "If speaking is silver; then listening is gold". It develops a good level of confidence and interpersonal relations between teacher and the pupils.

Kindness- Teachers have to be kind to the students as they are to their own children. Teachers should form such an image that the students should idolize them to be their role model.

Working tirelessly- Teaching is not considered as a job but a passion and therefore good teachers devote more time in teaching related activities and realize more satisfaction. Such teachers command more respect from the students and society.

Excitement for teaching- A good teacher is always excited to engage the class and motivate students to perform. Such teachers are disciplined, hard working, zealous, dedicated and honest. They stick with ethics and social values above the selfish ones of income, power and prestige. ❑

(Deenbandhu Chhotu Ram , University of Sci. & Tech., Sonepat- Haryana)

आन्ध्र प्रदेश उपाध्याय संघ का प्रथम प्रदेश अधिवेशन सम्पन्न

आन्ध्रप्रदेश उपाध्याय संघ (APUS) का दो दिवसीय प्रदेश अधिवेशन 11, 12 नवम्बर को गुंटूर में आयोजित हुआ। यह कार्यक्रम श्री वेंकटेश्वरा विज्ञान मंदिर में आयोजित किया गया। जिसमें 1500 अध्यापक-अध्यापिकाओं ने भाग लिया। 11 नवम्बर को प्रातः 9 बजे राष्ट्रीय ध्वज एवं आन्ध्र प्रदेश उपाध्याय संघ के ध्वज के आरोहण के साथ संगठन के अध्यक्ष दंडु बापिराजु एवं महामंत्री यं. राजशेखर राव ने कार्यक्रम के कार्याचरण के विषय में बताया। बाद में अ.भा.रा.शैक्षिक महासंघ के अ.भा. संगठन मंत्री महेन्द्र कपूर के नेतृत्व में शहर में रैली का आयोजन हुआ।

वैंकटेश्वर मंदिर में ही 11 बजे दीप प्रज्वलन के साथ उद्घाटन सत्र प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में पहले राज्य गीत 'माँ तेलुगु तल्लिमि मल्ले पूदेडा' का नृत्याभिनय हुआ। इस कार्यक्रम में माँ देवादास धर्मादाय शाखामात्य श्री मा विक्याल राव, माँ वैद्य आरोग्य शाखामात्य, श्री कामिनेनि श्री निवासराव, अ.भ.रा.शै.महासंघ के संगठन मंत्री महेन्द्र कपूर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचारक भरत जी, प्रांत कार्यवाह वेणुगोपाल नायडू, ए.बी.आर. एस.एस. के शिक्षा प्रतिनिधि वै. वि. रामरेड्डि, अ.भा.रा.शैक्षिक महासंघ के माध्यमिक संवर्ग के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा तेलंगाना राज्य प्रतिनिधि पी. वेंकटराव, तिरूपति के प्रमुख विदूषी श्रीमती चंदलवाडा सुचरिता जी, एम.एल.सी. ए. रामकृष्णा आदि गणमान्य जन उपस्थित हुये।

बैठक डि. वाणिराजनी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। बैठक का उद्घाटन करते हुये माणिक्य राव ने अध्यापकों को अपनी सोच बदल कर अपने अधिकारों पर ही नहीं अपितु दायित्व निभाने पर भी ध्यान देने की बात कही। छात्रों में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न कर हम नवसमाज का निर्माण साकार कर सकते। कामिनेनि श्री निवासराव ने अपने उद्‌बोधन में राज्य के प्रत्येक अध्यापक को हेल्थ कार्ड जारी करने एवं सभी अस्पतालों को इ.एच.एस. की परिधि में लाने की कोशिश का वादा किया। संगठन के प्रदेश अध्यक्ष बापिराजु और महामंत्री राजशेखर राव ने आन्ध्र प्रदेश उपाध्याय संघ की भूमिका, उसके मूल सिद्धान्त और उसकी संघ निष्ठता के विषय में प्रकाश डाला। उन्होंने राज्य के अध्यापकों की समस्याओं एवं सी.पी.एस. विधान, सी.पी.ई. पालिसियों को रद्द करने और नवीन पी.आर.सी. जारी करने हेतु राज्य सरकार के अधिकारियों से वार्ता करने और सुलझाने की बात कही। मुख्यवक्ता श्री रामरेड्डि ने कार्यकर्ताओं की दीक्षा और सेवाभाव के विषय में प्रेरणादायक उद्‌बोधन दिया। अ.भा.रा.शै. महासंघ के अ.भा. संगठन मंत्री महेन्द्र कपूर और रा.स्व.संघ के आन्ध्र प्रदेश के प्रान्त प्रचारक भरत जी ने संगठन की उन्नति और कार्यप्रणाली के विषय में मार्गदर्शन किया।

अधिवेशन के दूसरे दिन नि.नि.दे. कल्याण मंडल में बैठक के दूसरे दिन अध्यक्ष दंडवापि शत्रु ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मंचासीन अ.भा.रा.शै.महासंघ के अ.भा. संगठन मंत्री महेन्द्र कपूर ने सारे भारत में एक ही विधान में शिक्षा देने की आवश्यकता और सी.सी.ई. पर प्रकाश डाला। उन्होंने पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में देशभक्ति भावना बढ़ाने वाले पाठ्यांशों को जोड़ने से छात्रों में राष्ट्रीयता, देश भक्ति आदि गुणों को विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। भरत जी ने अपने वक्तव्य में मातृभाषा में प्रारम्भिक शिक्षा देने एवं छात्रों के लिये नैतिक शिक्षा प्रदान करने की बात कही। इसमें 13 जिलों के कार्यप्रतिनिधि सम्मिलित हुये। भोजनावकाश के बाद सी.पी.एस. पालिसी और सी.सी.ई पालिसि को रद्द करने व नई पी.आर.सी. जारी करने आदि समस्याओं को सुलझाने हेतु 10 निष्कर्ष प्रस्तु किये गये, जिसका समूह ऊँ ध्वनि से अनुमोदन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री राम राजशेखर, सि.एच. श्रवण कुमार, पोलय्या, सुब्रह्मण्यम, श्रीमती सुनीता, राम मोहन, ए. बलराम आदि उपस्थित थे। अधिवेशन का समापन शांति मंत्र से हुआ।

झारखंड प्रदेश के उच्च शिक्षा संवर्ग का अभ्यास वर्ग सम्पन्न

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के झारखंड प्रदेश के उच्च शिक्षा संवर्ग का प्रदेश अभ्यास वर्ग दिनांक 18 एवं 19 नवंबर 2017 को रांची विश्वविद्यालय के मानव संसाधन विकास केन्द्र, रांची में आयोजित किया गया।

अभ्यास वर्ग में कुल आठ सत्रों में ABRSM एक परिचय, सैद्धांतिक भूमिका, शिक्षक कार्यकर्ता की संकल्पना,कार्य पद्धति, प्रवास, सदस्यता, आगामी कार्यक्रम, 7th पे कमिशन, शिक्षा क्षेत्र की गुणवत्ता आदि विषयों पर कार्यकर्ता प्रबोधन एवं चर्चा की गई ।

इसमें सातवें वेतनमान की विसंगतियों पर डॉ. मनोज कुमार और डॉ. अशोक चौधरी ने चर्चा की, साथ ही इसके समाधान के लिए राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर पहल करने का निर्णय लिया गया।

सिद्धो कान्हो मुर्मू विश्वविद्यालय शैक्षिक संघ के अध्यक्ष डॉ. अजय सिन्हा ने शिक्षकों को पीएचडी इंक्रीमेंट, एजीपी व प्रोन्नति समय पर नहीं मिलने का मुद्दा उठाया। इस पर सरकार से पहल करने की रणनीति बनाई गई।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री महेन्द्र कपूर ने शैक्षिक महासंघ के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि यह संगठन राष्ट्र के हित में शिक्षा, शिक्षा के हित में शिक्षक व शिक्षक के हित में समाज की परिकल्पना लेकर कार्य कर रहा है। उन्होंने दिसम्बर मास में राज्य भर में सदस्यता अभियान चलाने का आग्रह किया और जनवरी में झारखण्ड प्रदेश की इकाई गठन करने की घोषणा की।

अभ्यास वर्ग में कुल पाँच विश्वविद्यालय (रांची विश्वविद्यालय, रांची, बिनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, सिद्धो -कान्हो मूर्मू विश्वविद्यालय, दुमका, कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा, नीलाम्बर -पीताम्बर विश्वविद्यालय, मेदनीनगर) के 45 प्रमुख शिक्षक कार्यकर्ता उपस्थित रहे। प्रदेश अभ्यास वर्ग में राष्ट्रीय संगठन मंत्री महेन्द्र कपूर एवं उच्च शिक्षा प्रभारी मान्यवर महेन्द्र कुमार का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ ।

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ उत्तराखण्ड का प्रदेश कार्यकर्ता अभ्यास वर्ग संपन्न

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ उत्तराखण्ड के कार्यकर्ताओं का अभ्यास वर्ग भाऊराव देवरस कुञ्ज देहरादून में दिनांक 13 नवम्बर, 2017 को सम्पन्न हुआ। प्रदेश भर के प्राथमिक-माध्यमिक और उच्च शिक्षा के चयनित शिक्षकों ने संगठन की रीती-नीति, भावी कार्ययोजनाओं की चर्चा के साथ ही प्राथमिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालयी शिक्षा और शिक्षकों की समस्याओं के समाधान के लिए एक समन्वित विमर्श किया गया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड सरकार के माध्यमिक शिक्षा मंत्री अरविन्द पाण्डेय ने माध्यमिक-प्राथमिक शिक्षा और शिक्षकों की समस्याओं से अवगत कराते हुए समाधान का संकल्प दुहराया और कहा कि शीघ्र ही शिक्षा क्षेत्र में व्यापक बदलाव का असर दिखेगा।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री ओमपाल सिंह ने संगठन कि रीती नीति की परिचर्चा करते हुए भावी कार्यक्रमों और संगठन विस्तार पर बल देते हुए कहा कि यह शिक्षक संगठन अन्य शिक्षक संगठनों से अलग है। यह संगठन शिक्षकों की समस्याओं के समाधान के लिए तत्परता साथ ही समाज निर्माण, राष्ट्र निर्माण के दायित्व के संकल्प को लेकर अस्तित्व में आया है। जब राष्ट्र निर्माण की बात हो तो कर्तव्य बोध स्वत: ही प्रकट हो जाता है। भारतीय संस्कृति भावी पीढ़ी आत्मसात करे ऐसा प्रयास हमारे द्वारा होना ही चाहिए।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचारक युद्धवीर ने संगठन करने वाले कार्यकर्ताओं के आवश्यक गुण और श्रेष्ठ कार्यकर्ता निर्माण की प्रक्रिया बताई। उन्होंने कहा कि संगठन के लिए जब कुछ लोग अधिक समय देते हैं तब अधिक लोग कुछ समय देते हैं। कार्यकर्ता प्रमाणिक, अनुशासित, समय देने वाला, मृदुभाषी, सामंजस्य बनाने वाला, समाज को दिशा देने वाला आत्मविश्वास से परिपूर्ण होना चाहिए क्योंकि हम समाज परिवर्तन के लिए है।

अभ्यास वर्ग के उद्घाटन सत्र में माध्यमिक शिक्षा मंत्री अरविन्द पाण्डेय के समक्ष प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षकों की विभिन्न समस्याओं को समाधान के लिए रखा गया। जिसका मंत्री द्वारा सभी समस्याओं को प्राथमिकता से हल करने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा आप अपना कार्य पूर्ण ईमानदारी से करिए आपकी समस्याओं का समाधान मेरी जिम्मेदारी है।

अभ्यास वर्ग के द्वितीय सत्र के मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने विश्वविद्यालय व महाविद्यालय शिक्षा और शिक्षकों कि समस्याओं को सुना और उनसे सुझाव लिए गए। जिससे विभिन्न विश्वविद्यालयों/ महाविद्यालयों से आये प्राध्यापकों ने अपने सुझाव रखे।

उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत द्वारा विस्तार से सरकार द्वारा शिक्षा सुधार के लिए उठाये गए सकारात्मक व रचनात्मक कार्यों को रखा गया। सभी समस्याओं को गंभीरता से सुनकर उनके निदान कि प्राथमिकता से हल करने को आश्वस्त कर उच्च शिक्षा में किये जा रहे सुधारों पर सहयोग की अपेक्षा जताई और उन्होंने कहा कि इन दो दिनों में जो भी विचार विमर्श के बाद निष्कर्ष निकलेंगे उन्हें उच्च शिक्षा में समाहित किया जायेगा।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री ओमपाल सिंह ने समापन सत्र में महासंघ की इकाइयों का पुनर्गठन किया, जिसमें राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ, उत्तराखण्ड के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. विजय पांडेय, महिला संवर्ग अध्यक्ष डॉ. रश्मि रावत, संयुक्त महामंत्री डॉ. अनिल नौटियाल, सह संगठन मंत्री शिव नारायण बने।

Karnataka State Executive Committee Meeting

Karnataka State Secondary Teacher's Association has organised state Executive committee meeting held on 12th November 2017 in Hubballi.

ABRSM All India General Secretary Kshetra Shivanand Shindankera and South Central Kshetra Incharge Prof. K. Balkrishna Bhat have graced. National General Secretary Shivanand Sindankera was falicitated on the occation.

Press meet held by Shivanand Sindankera to spotlight on 23rd issues of teachers State General Secretary Chidanand Patil, Joint General Secretary Sandeep Budihal, ABRSM National Joint Secretary [Womens wing] Smt Mamta D. K. Addressed over the programme.

जम्मू कश्मीर प्रदेश के प्रतिनिधि मण्डल की उपमुख्यमंत्री डॉ. निर्मल सिंह से भेंट वार्ता

आल जम्मू कश्मीर एण्ड लदाख टीचर फैडरेशन (सम्बद्ध अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ) के एक प्रतिनिधि मण्डल ने 21 नवम्बर, 2017 को जम्मू कश्मीर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री से भेंट कर प्रदेश में शिक्षकों की समस्याओं को लेकर विस्तारपूर्वक चर्चा की। जिसमें विशेष रूप से 2014 में पदोन्नति प्राप्त Adjustment of Left out Masters को तुरन्त समायोजित करने, तबादला नीति को पारदर्शी बनाने तथा कश्मीर सम्भाग की तुलना में जम्मू सम्भाग में शिक्षा के क्षेत्र में सभी कार्य देरी से होने पर विशेष चर्चा हुई।

इन सभी समस्याओं को संज्ञान में लेते हुए उन्होंने प्रदेश के शिक्षामन्त्री एवं शिक्षा विभाग के कमिश्नर के साथ शैक्षिक महासंघ के प्रतिनिधि मण्डल को बिठाकर विस्तारपूर्वक समस्याओं के निराकरण हेतु तुरन्त चर्चा करने की बात कही। इस पर प्रतिनिधि मण्डल ने उनके व्यावहारिक दृष्टिकोण के प्रति सन्तोष का अनुभव करते हुए उपमुख्यमन्त्री का आभार प्रकट किया।

प्रतिनिधि मण्डल में प्रदेश अध्यक्ष देवराज ठाकुर, प्रदेश उपाध्यक्ष महेश्वर प्रसाद, प्रदेश महामंत्री रतन शर्मा, प्रदेश मन्त्री मन्जीत सिंह, प्रदेश मीडिया प्रभारी राधाकृष्ण, राजेश गुप्ता एवं अशोक शर्मा शामिल थे।